5043

डीड़गर इपिल

(मुंडारी नाटक – चलिता इनुङ)

जोवाकिम तोपनो

डीड़गर इपिल

डीड़गर इपिल

(मुंडारी नाटक - चलिता इनुङ)

जोवाकिम तोपनो

PYARA FOUNDATION

प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन

राँची (झारखण्ड)

मूल्य : ₹ 120
सर्वाधिकार © जोवाकिम तोपनो

प्रकाशक:
प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन, चेशायर होम रोड, बरियातु, राँची-834009,
दूरभाष : 0651-2201261, ई-मेल : pkfranchi@gmail.com,
वेब पता : www.kharia.in प्रथम संस्करण : जनवरी 2016
टाईपसेटिंग/आवरण : बिर बुरु ओम्पाय मीडिया 9234301671
मुद्रक : शिवशक्ति प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली

DIRHGAR IPIL
(Mundari drama by **Jowakim Topno**)

ISBN : 978-93-81056-59-2

C1

काको रिड़िंगओःअ

ने चलिता इनुङ रे "छोटानागपुर मुंडा छात्र संघ रांची" काइंग रिड़िगञयाँ। मोसा ने संघ रेअः सनमतुनुर कैम्प बांकी हतु, थाना बानो, जिला सिमडेगा (झारखंड) रे होबा लेना। ने संघ नेलतन जेता गुपीको कको सेन सेटेर केना। एन इमतङ गोटलि (कॉलेज) रेन मापरङ (सीनियर) सेपड़ेद कोगी ने कैम्प रअः बारोम को गोः केदा बांकी रेन पड़हा राजा को सवाल को विरिद् तदा चि बेगर अनचुनम (अनुमति बगैर) चिलकाते नेरे कैम्प होबाओः तना। ने सवाल सेपड़ेद कोआ मोलोङरे दुब् जना। सेपड़ेद कोरे इमतङ सेंड़ान सेपेड़ेदाए तइनकेना सुलेमान मुंडरी, हतु कुदाडीह, ब्लॉक बंदीगाँव, जिला खूँटी नाअः निकिन बानो ब्लॉक रेन बी.डी.ओ तनकिन।

(निकिन पड़हा राजा कोअः दपरोम नुक्कड़ नाटक मिन बएकेदा अद् सुगोसिंङ (एतवार) हुलङ गोवरि पनती ओनोडोङ को उदुब् केदा।)

ने चलिता इनुङ लेकागे एन नुक्कड़ नाटक रे मिअद् कुड़ी होन दिल्लीए सेन केना अद् हम्बल होड़मो जनेते रूड़ा लेना। पड़हा राजा को दुब् जना। एंगा- अपुकिन रअः जना, कुड़ी होनोए रअः जना। मेनदो कुड़ी होनअः चेतन कजिते पड़हा राजा को हरतिंञ उतर जना।

ओको दिपलि ने ओनोलइंग ओलापुराकेदा ओड़ोः मरंग हगाइंग मइनन लौरेन्स सिलास हेम्बरोम "सेरेंञ" के नेतो नेअः चलिता इनुङ नेल पोकतो लेम मेनेअःतेंग ओमाइअ। एन दिपलि निः रानुओड़अः रेन को होन होपोन तेको सेवा सुसारि तअइना एन दिपलिगे नेरेअः नेल बअइ अद् सोतोः रूड़ा केअद ओलसोतोः कमीइ कमी पुरातदा। एनाते निः दो हिरगों काए रिड़िंग दड़िओगा। एनकागे ओड़ओ कोओ अकोअः उनुसकुर जगर उनुदुब कोतेको चुलु केनकोरे "सेंड़ा सेतेंग्" ओल सोतोः गोमके नवीन मुंडू, झारखंडी सइति ससनटअः रेन बरान कुलागिअ अश्विनी कुमार पंकज अद् मिसी वंदना टेटे, मइनन् कुशलमय मुंडू, पोलीकर्प जोजो तअयन दअः होड़ो जगरे टुडअः कमीइ कमी तदा। ओड़ओ सोंगेते रेमिस कंडुलना, मरटिन सुरीन "बी"ओ ककिन रिडिंग दड़िओअ।

ने नाटक रे पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा मेनते मुंडारी मुटन मिदअः, बिरअः, इपअः उपअः ओला कना। हिन्दी नाटक रे अङ्क ओला कनअःगे चिटिद् जना (चिटा ते बैयाकना)।

जोअर।

जोवाकिम तोपनो

आभार

इस नाटक में "छोटानागपुर मुंडा छात्र संघ" रांची को कैसे भूलूंगा? एक बार इस संघ का शिविर बांकी गाँव, थाना बानो, जिला सिमडेगा (झारखंड) में आयोजन किया गया था किसी कारणवश संघ का कोई अभिभावक शिविर नहीं जा सका। नियम है कि प्रत्येक संघीय कार्यक्रम में कम से कम एक अभिभावक उपस्थित रहे। उस समय परिस्थितिवश कॉलेज के वरिष्ठ मुंडा छात्रों ने ही इस शिविर का जिम्मा लिया। बांकी के पड़हा राजाओं ने सवाल किया कि अनुमति बगैर शिविर कैसा? जबकि तोरपा, मरचा, कमडारा, गोविंदपुर, डोड़मा, बंदगाँव, खूटी, सरवादा, कर्रा आदि जगहों में कहीं भी अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं पड़ी थी।

यह छात्रों के मन में बैठ गया। उन छात्रों में तेज दिमाग वाला छात्र था सुलेमान मुंडारी, ग्राम कुदाडीह, ब्लॉक बंदगाँव, जिला खूँटी जो वर्तमान में बानो ब्लॉक के बी.डी.ओ है। उन्होंने पड़हा राजाओं को चुनौती देते हुए एक नुक्कड़ नाटक बनाया और रविवार को चर्च से निकलते ही उसका मंचन किया गया। इस नुक्कड़ नाटक में एक लड़की दिल्ली गई थी और भारी पाँव घर लौट आयी। पड़हा राजाओं की बैठक हुई। लड़की के मां-बाप और उस लड़की को भी बुलाया गया। उससे सवाल जवाब किया गया परन्तु उस लड़की ने प्रश्नों का उत्तर, प्रश्नों में ही दिया।

जब मैंने लिखना पूर्ण किया तो अपने अग्रज भाई लौरेंस सिलास हेम्बरोम "सेरेंज" को अवलोकन हेतु दिया। उस समय वे अस्वस्थ हो अस्पताल में भर्ती थे। उनकी सेवा बच्चे मां कर रहे थे, ऐसी हालत में भी वे सुधारने के लिए सहमत हुए और नाटक की त्रुटियों को दूर किया। ऐसे व्यक्ति को कैसे भूल सकूंगा। कई अन्य लोगों ने भी अपने-अपने सुझावों और कामों से मुझे प्रोत्साहित किया उनमें सेंड़ा सेतेंगू के सम्पादक नवीन मुंडू, झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा के अश्विनी कुमार पकंज एवं वंदना टेटे, कुशलमय मुंडू, पोलीकर्प जोजो जिन्होंने मुंडारी में टंकण कार्य में सहयोग दिया। इसके अलावे वाल्टर भेंगरा 'तरुण', रेमिस कंडुलना और मरटिन सुरीन 'बी' को भी धन्यवाद देता हूँ जिनका सहयोग बराबर मिलता रहा।

इस नाटक में पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा का मुंडारी रूप मिदअः बिरअः, इपअः, उपअः दिया गया है। अंङ्क के लिए चिटिद् का प्रयोग किया गया है जो मुंडारी शब्द चिटा से बना है। दृश्य के लिए उनुदुब दिया गया है।

जोअर।

जोवाकिम तोपनो

बर टुङ

ने चलिता इनुङ रे नेया गे उदुबाकना :-

1. अबु ओकोअःबु जगर तना, आइन अड़ी रेबु तोल जदा एन लेका काबु सेसेन तना।

आइन लेकाते एटाको हेरेल कोअः दर्जा को नमाना मेनदो सेनेन (चाल-चलन) रे एनका बनोः।

2. सिदा रअः का ठौका मनतिंञ को नाअः ओबु मनातिंञ तना एनातेगे जनाओ खबर कगद् रे नजोम बोंङ्गा चि 'डाइन विषाही रेअः पइति को हिजुःउ तना।
3. एरा को अकोगे अकोःआ का ठौका उड़ुःते अकोअः होरा को अद् जदा। मेनेमे गंगी एरा तनि रेयो टका हयाते कुड़ी होनको दिल्ली ते इदी-इदी अकरिंञ जद कोअः।
4. सम्बुद (समाज) रे मेनअः सुम्बिद (संगठन) को सम्बुद रेअः बुगिनअः होबाओःको मेनेःआ दो का मेनदो इलि अरखि लोःते जोम चिलकाते नमोःआ मेनेःआ को उड़ुः खुखनि तना। नअः हतुकोरे बरिया सुम्बिद मेनअः, हतु दुनुब् (1) मुंडा, पहँड़, महतो (2) बाइस पड़हा
5. टुंडू कजि एरा को अकोको नेल उरूमेन रेदो सम्बुद् मजा तेको सोतोः दड़िआ।

मर जोअर

लौरेंस सिलास हेम्बरोम "सेरेंञ"

रांची।

दो शब्द

इस नाटक में यही दर्शाया गया है कि

1. जो हम करते हैं तथा कानून बना देते हैं वैसा हम चलते नहीं हैं। स्त्री को पुरुष के बराबर अधिकार मिला है परन्तु व्यवहार में वैसा नहीं है।
2. पूर्व प्रचलित अनुचित मान्यताओं को अब भी हम मानते हैं। इसीलिए प्रतिदिन अखबारों में डाइन-बिसाही की चर्चा देखते हैं।
3. कुछ महिलाएँ स्वयं ही अपने अनुचित विचारों से पथ भ्रष्ट हो रही हैं। जैसे गंगी महिला होते हुए भी पैसे के लालच में लड़कियों को दिल्ली में बेच आती हैं।
4. समाज में स्थित संगठन भी समाज की भलाई के बदले हड़िया दारू और खान-पान पर अधिक ध्यान देते हैं, वर्तमान में गांवों में दो संगठन हैं। एक मुंडा, पहान, महतो, दूसरा बाइस पड़हा।
5. अन्त में यहीं कहना है कि महिलाएँ भी अपने आपको पहचानेगी, सोच बदलेंगी तो समाज की भलाई होगी।

धन्यवाद

लौरेंस सिलास हेम्बरोम "सेरेंज"

रांची।

अपनी बात

मुंडारी भाषा को जब हम देखते हैं शिष्ट साहित्य की अति कमी खलती है। यह तब और गम्भीर हो जाती है जब हम जब हम मुंडारी नाटकों की हालत पर बात करते हैं। जबकि उनके बीच हपड़ोम नाटकीय खेल सबसे रुचिकर खेल है, उसका उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा प्राप्ति भी है। उनके बीच हपड़ोम खेल, जैसे- कंठड़ा इनुङ, तुयु अद् मियद् बुडी सिम-भुट्टा उकु-उकु, तोवा चि छाली एमन एमन नाटकीय खेल प्रचलित रहे हैं जो मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानवर्धक भी हैं, और वर्तमान समय में भी प्रसांगिक हैं। परन्तु आज ग्रामीण खेल एवं मनोरंजन के तौर तरीके सभी शहरी चकाचौंध में समावेश होने के कारण लुप्त हो गये हैं। अब हमें गावों में कथा कहानियां सुनानेवाले और न ही सुननेवाले मिलेंगे। ये सभी मौखिक विद्यायें प्रायः समाप्त हो गई हैं। मौखिक परांपराओं का संकलन नहीं होने से अब ये लुप्त हो गये हैं।

आज मुंडाओं के अन्दर अपनी मातृभाषा के प्रति कोई उत्साह भी नही दिखता और न तो साहित्य के प्रति लगाव एवं रुचि ही दिखाई देती है, जिसके कारण वे आपस में, अपने बाल-बच्चों से न अपनी मातृभाषा में बातचीत करते हैं, न उन्हें मातृभाषा सिखाते हैं, और न ही उन्हें मुंडा समाज का संस्कृति और संस्कार देते हैं। लिखने पढ़ने की बात तो दूर की है। हां थोड़ी बहुत सुगबुगाहट अवश्य है।

दोष इनका भी नहीं है क्योंकि आज हमारी शिक्षा व्यवस्था ही ऐसी है जहां न हमारी मातृभाषा में पढ़ाई-लिखाई होती है न तो इतिहास संस्कृति ही बतायी जाती है। यही हाल हमारे इतिहास और शहीदों के बारे में भी है। यहां तक कि हम न अपने दिवंगत साहित्यकारों, लेखकों, कवियों और शहीदों का ही कभी स्मरण करते हैं, न तो उन्हें श्रद्धांजलियां देते हैं और न ही उनकी कुर्बानियों की याद करने का प्रयत्न ही करते हैं। आश्चर्य तो तब लगता है जब इन बच्चों से पूछे जाने पर वे कहते हैं कि उन्हें तो यह भी पता नहीं कि उनकी अपनी कोई मातृभाषा भी है? उन्हें यह जानकारी नहीं है कि हम सभी अपनी मां से जो भाषा सीखते हैं उसे ही मातृभाषा कहते हैं। वे तुरन्त जवाब देते हैं कि हिन्दी हमारी मातृभाषा है, उन्हें मुंडा या उरांव या खड़िया, हो अथवा संथाली कहने में शर्म आती है। स्कूलों में शिक्षक यही पढ़ाते हैं।

वर्तमान इलेक्ट्रोनिक युग में गांव हो या शहर सभी इसके भुक्तभोगी गुलाम बन चुके हैं। आज यह हमारे जीवन का एक अति आवश्यक अंग बन गया है। इसके बगैर हमारा रहना भी असम्भव हो चला है। इस तकनीकी प्रयोग से लाभ के साथ-साथ अन्य हानियाँ भी हैं जिनसे हमारा दोहन हो रहा है। श्री एस. एन. मुण्डा का यह कथन मुझे इस संदर्भ में सटीक लगता है कि 'राजनीतिज्ञों के प्रति भी नाराजगी है, चुंकि इन्होंने झारखण्ड की सोच को समझने का प्रयास कभी नहीं किया गया है जिससे न केवल झारखण्ड समुदाय का अस्तित्व खतरे में है बल्कि हमने प्राचीनतम वैज्ञानिक तथ्यों को खोया है। आज धीरे-धीरे अपनी मातृभाषा भूलने के कारण भी मिट्टी लतर, चट्टान घास-पात, वृक्ष की जड़ों, छालों की विशेषताओं से अपरिचित हो रहे हैं।' (झारखण्ड की विरासत एवं विकास- पृष्ठ 2)

इस वैश्विक व्यापार के दौर में आज मानव व्यापार का बाजार भी खुलेआम चरम पर है। यह एक गंभीर समस्या बन गयी है। मानव तस्कर की समस्या जिसके अन्तर्गत वेश्यावृति, घरेलु कामों को करवाने, खेतों में मजदूरी करने, शारीरिक अंग निकालने व जबरन शादी के लिए शहरों में नकली मां-बाप बनकर उन्हें बहला फुसला कर ले जाते हैं, उनसे अनैतिक कार्य करवा कर उनका आर्थिक, मानसिक व शारीरिक शोषण और न जाने पैसे के लिए कितने घिनौने काम करवा रहे हैं। इंसान जबकि सर्वश्रेष्ठ प्राणी में गिने जाते हैं। गांव-देहात के दूर दराज इलाके में लोग इस घिनौने हरकत में दिन ब दिन फंसते ही जा रहे हैं। समाज दूषित होता जा रहा है।

ऐसी ही एक हकीकत घटना को माध्यम बनाकर 'हिम्मतवाली इपिल' नामक नाटक लिखा है। जिसका मुख्य पात्र इपिल है जो मजबूरन इस भ्रम में फंस गयी है क्योंकि इसके सिवा उसे और कोई दूसरा रास्ता नही दिख रहा था। इस नाटक को हम लघु नाटक ही कह सकते हैं; हालांकि कथा को और भी विस्तृत किया जा सकता है ।

यह मेरा पहला नाटक है, जिसमें मैंने सामाजिक बुराइयों को उकेरने का छोटा-सा प्रयास किया है। इसलिए इसमें कई त्रूटियां हो सकती हैं, इस ओर पाठक अवश्य मुझे अपने बहुमूल्य सुझाओं से सहयोग करेंगे तब मैं समझूंगा कि मेरा प्रयास सफल रहा। यह मेरी मातृभाषा मुण्डारी में है।

शुभकामनाओं सहित।

बिरसा जयंती, 15 नवंबर 2015

जोवाकिम तोपनो

मुंडारी नाटक - चलिता इनुङ

डीड़गर इपिल - हिम्मतवाली इपिल

नाटक का सार

प्रस्तुत नाटक मानव व्यापार करनेवालों से संबंधित अमानवीय कर्म पर आधारित है। नाटक का उद्देश्य आदिवासी समाज के उस पक्ष का उजागर करना है जो समाज को प्रभावित करता है और उसे पतन की ओर ले जाता है।

प्रथम अंक में यही दिखाया गया है कि शिक्षा में प्रगति चाहनेवाले युवा वर्ग के मार्ग में बाधाएं क्या - क्या आती हैं। इन बाधाओं को लांघने या समस्याओं का समाधन करने के लिए जगह जमीन भी बन्धक करना पड़ता है, परन्तु युवा वर्ग इन परिस्थितियों को भुलाकर प्रेम सम्बन्ध जोड़ विवाह कर अपने घर को, अपनी पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेवारियों को भुला जाता है।

दूसरे दृश्य में रुग्न व्यक्ति के माध्यम से समाज में व्याप्त पिछड़ापन को दिखाया गया है। इपिल अपने बीमार पिता को अस्पताल ले जाने के लिए पहान, गांव का मुंडा, पड़हा राजा (गोत्र का मुखिया) के सामने हाथ पसारती है, परन्तु कोई लाभ नहीं होता, उसे मदद नहीं मिलती। मानव तस्करी में लिप्त गंगी ऐसे में उसको मदद देती है। उसको दिल्ली का सब्जबाग दिखाती है और पिता के स्वस्थ होने के लिये इलाज कराने हेतु इपिल को अपने पैसों से दिल्ली ले जाती है। गंगी उसके साथ अन्य चार युवतियों को दिल्ली ले जाती है जहां मानव तस्करी में लिप्त दलाल उसे प्रति युवती पांच हजार रुपया देते हैं।

तीसरे अंक में दिल्ली जाना और खाली हाथ लौटना दिखाया गया है। इसमें शारीरिक शोषण से पीड़ित इपिल गर्भवती दिखायी गई है। गांव में वह इस कारण बदनाम होती है। मुंडा पहान और पड़हा राजा पंचायत बैठाने की बात करते हैं। इस बीच इपिल के साथ युवा वर्ग भेंट करता है। युवक-युवतियां उसे उत्साहित करते हैं कि वह पंचायत के आगे न झुके।

पंचायत होती है। इपिल के मां-बाप को बुलाया जाता है। इपिल और दिल्ली से लौटी सभी युवतियां पंचायत में आती हैं, युवक भी आते हैं। इपिल के

मां-बाप और इपिल से पूछा जाता है। उसके माता-पिता झुक जाते हैं परन्तु इसी वक्त इपिल तनकर खड़ी हो जाती है। उसे पहान मार-पीट की धमकी देता है। परन्तु वह अडिग जवाब देती है। युवा वर्ग भी समर्थन देता है और उसकी इस स्थिति के लिए गंगी को दोष देते हैं। मानव-तस्कारी के लिए गंगी पर जुर्माना तय करते हैं, परन्तु इपिल का पिता बीमारी में उसके द्वारा की गयी सहायता का हवाला देते हुए क्षमा याचना करता है। पहान सबसे सलाह लेता है। सभी इपिल के पिता का समर्थन करते हुए हिदायत देते हैं कि उसे क्षमा किया जाएगा परन्तु आइन्दे वह ऐसा काम दोबारा न करे। गंगी की स्वीकृति में नाटक समाप्त हो जाता है।

डीड़गर इपिल

(चलिता इनुङ)

सोमपव
कमिनाला हपानुम को।

घरेलु कामगार
आयो-बहनों को समर्पित।

डीड़गर इपिल

<u>महिला पात्र</u>

इपिल

सुकवरो

मुण्डा बुड़िया

गंगी

सिबिल

बिरसी

मंगरी

रंदाय

<u>पुरुष पात्र</u>

करमा

दोन्दोः

मसी

बिरसा

रतन

सनिका

मुण्डा

पटा भगत

पहंड़

पड़हा राजा

डीड़गर इपिल

मिदअः चिटिद -

मिदअः उनुदुब्

मेट्रिक रेअःरिजल्ट उड्डुञअकना, रतन अएगअः सोंगे कोलोःए जगरतना

करमा - अमा रतन, नेलुद[1] दो कम नेलुद् तइना, चते फर्स्ट डिबीजन रेम उड्डुञजना!

दोन्दोः - बोलो तनलोःचते काए उड्डुञोःआ? दरअः[2] रे दूब् हपेया कनोःए तइनतइना; साएरनिः[3] ओकोःअए कुलीकिःआ सेकड़ाए कजि रुवड़जद् तइना।

मसी - एना दो हेगे, मेन्दो मुसिंञो नेलुद् तन दो काए नेलोः तइना।

बिरसा - हे देरञ। मेन्दो ओकोए ओकोएअःजोनोमेतेगे सेंड़ा तइयोःआ। एनाबु चाया? (चिकाया)

रतन - हों, अउरि अञ जगरलेआ। अञ दरअःरे बुगितेञ अयुम बए जद् तइना। नाअःओ अञंगअः ओलजपअः[4] पे नेल दड़िअ।

करमा - इदु ओड़ोः जनव दो कथनी कोगे नेलुद् तनञ नेल जअःम तइना। सरिता, कदाम्बिनी ओड़ओ सेंड़ासेतेंञ एमन-एमन को।

रतन - हे दो हेगे, मेन्दो अञ कमि कञ रिड़िञ जद् तइना।

दोन्दोः - हे तोबे, नाअः दो एना जगरकोबु होकालेःअ। अयरते चनअःबु चिकाअः? मरअः एना कजियोका।

मसी - अञ दो पोलिटेकनिक मेनतेञ उड्डुःआ कदा। इदुलाअःनेलुद् जनेते कमिनला नुकरीनमोःआ चि का।

बिरसा - एना दो एनकागेअः। मेनदो अञ मोनेकेटेःअ कदा बी.ए. हबिइञ इतुकोआ ओड़ोः बीडीओ, सीओ, दारोगा एमन-एमन ओल लपअः[5] कोञ नेल ले गिआ।

दोन्दोः - अञ दो इन्टर उड्डुङ जनेते ओड़अः गेञ रुअड़ा। हतु-हगा मिसी कोञ गुपीकोआ। चास-बासञ नेला अद् मुखिया, सरपंच बएजनरेदो हतुञ सम्बड़ाओआ।

करमा - अञोगे बैचलर होबाजनेतेदो बी.एड मेनतेञ उड्डुःअकदा। बी.एड. केद् मरङ इतुसईर्ं[6] साएरनिःञ बएओआ।

बिरसा - अम् दोवा रतन्! चनअःम उड्डुःआ कदा, जानअःओ कम जगरेःआ।

रतन - चनअःञजगरेआ? अञअःएयङ अब्बा तकिङ अयर तेदो ककिङ उड्डुः दड़िःआ।

दोन्दो - चनअः ककिङ उड्डुः दड़िःआ? अम् उड्डुः लगातिञा।

रतन - अञ चनअःञ उड्डुःया?

करमा - अम् चनअःम् उड्डुःया? कमि दो अमगे देरङ लगतिञा? उमा अब्बा तकिङदो देंगा ओमकिङ देरङ।

रतन - एनादो हेगे, मेनदो अकिङ ककिङ देंगा केरे अञ चनअःञ चिकाया?

बिरसा - चते देंगा ककिङ ओमेआ?

रतन - मेट्रिक हबिःदो जा लेकाकिङ इतुकिःञा अयर तेदो इदु।

करमा - काअः। जा लेकातेदो अम अयरते इतुनगे लगतिञा कारेदो फर्स्ट डिवीजन रअः चान लनअःपअः[7]?

रतन - बोकोञ कुड़ी इपिल दो का दड़ितेगे मोड़े दरअःएते किङ बागे रिकातअःइया।

दोन्दोः - एना कोदो उड्डुः होकाएमे अमअः उड्डुःएमे।

रतन - चनअःञ उड्डुःया? अञ दो एयङ अब्बा तकि रेगेञ टेंडेराकना।

बिरसा - एना कजि को तोरङ होका तमे तो। अम् हे मेनेमे।

रतन - चतेञ हेया? पेड़ेःगे बनोःआ।

करमा - पेड़ेः बनोआ मेनेःआ दो अलोम कजिया। अम् मोने केटेःमे होराको आएःतेगे उड्डोःआ।

रतन - कोरे उङड्डोःआ?

दोन्दोः - उड्डोःआ ; अनिः हड़म काएबगेबुःआ।

रतन - ओको हड़मम कजितना?

दोन्दोः - ओको हड़म? सिंगबोंगा। इनिःगे देरङ अबु मनतिंञतना।

रतन - इनिः दो मेनअःइगेआ।

दोन्दोः - तोबे?

रतन - अञ दो ओड़अःरेअः दसा नेलकेआतेञ कजितना। बगाजोगा दो मेट्रिकञ उड्डुङ जना।

बिरसा - एना दो बुगिन कजिगे मेनदो गोटलि[8] इतुनो हम्बल दो बनोः। अमूकजि खरचारे तोलेनमें। एटेःरे खरचा मेनअः, तयोम नेलुद् दरअःगे अमाए देंगामेआ। गोटा बोछोर रे तुरी हजार टका नमोःआ।

दोन्दोः - इमनुगं पोयसा नमजनरेदो मजाते कमि चलाओःआ।

करमा - कजितम गोटलिरे इतुनञ मोनेया कदा।

रतन - अञएते का होबा दड़ियोःआ।

दोन्दोः - का होबादड़ियोःआ दो का, मेनदो होबादड़ियोःआ मेनेम। सेरेञअः दुरंग कम अयुमकदा?

दुरतनाए - चिलिकालङ बिरिदा?

सोबेनको - सनगं तलगं बनोःरे दो

चिलिकालङ बिरिदा?

1. दिसुम कोरेन होड़ोकोदो

होलारेको बिरिदेजना

अयर तेको सेनेकेदा

बिपिरिद् होराते

चिमितलङ बिरिदा!!

2. सरना सके कोना

दुलु मुलु सुड़ा सगेनजना

सिंज अड़अ मदुकमको

पिड़ी पिड़ी सुड़ा सगेनजना!!

बिपिरिद होराते

चिमितालङ बिरिदा!!

3. बिरिदलङ सेनेःअल

मोनतलङ सुड़ा सगेनोःआ

बए बुतिद् सेंड़ा पुतिद्

अयर तेलङ सेन अयरेःआ

बिपिरिद होराते

चिमितालङ बिरिदा?

बिरसा - मरती चिमतालङ बिरिदा?

करमा - मोनेकेटेः जनरेदो लङ बिरिद्गेअः।

मसी - सेरेञअः गमुइदि कम अयुमकदा?

सनङ मेनअःरेदो लङ बिरिदा

सोबेनको - सनङ मेनअःरेदोलङ बिरिदा

सनङ बनोःरे दो हो कलङ बिरिदा।

1. हुर हुर तन होयो गमा गमाए,

टेपेसेर अरिल रतङ रताए

सनङ तलङ सेरेंञ गिरेदो

होयो गमा अरिल रतङ काएःजेतङ लाङ

2. रड़ रिड़ तन रिंमिबिल सड़ि सड़ाए

जर जिर तन रिमिबल हिचिर बड़ाए

सनङ तलङ सेरेंञ गिरेदो

रिंमिल सड़ी हिचिर बोतोङ काए जेताङ लङ।

3. दिरि टुकु मपरङ बुरुको सेरेंञ

गड़ा डोडा मपरङ बुरु को हुअङ

सनङ तलङ सेरेंञ गिरे दो

रपुदोःआ हदुड़ोःअ सेकेयोःअ हुअङ!!

बिरसा - मरती सनङ तलङ सेरेंञ गिरेदो रपुदोःआ हदुड़ोःआ सेकेयोःअ!!

करमा - हे मेनेमे!

दोन्दोः - मोने केटेएःमे।

रतन - हे तोबेञ नेलेआ।

(दनपलअः दपलोः तना)

बिरअः उनुदुब्

(रतन दो अएगअः सोंगे को चुलु रकब् तअःइआ मेन्दो उड्डुउरे टोः जनाए)

रतन - सोंगे तञअःको चुलुदोको चुलु रकबतअःञा मेनदो अञगअः एयङ अब्बा तकिङ हे'या चि का? सनङ तञ दो मेनअः गेआ अयर तेगेञ इतु कोअः मेनदो इदु।

इपिल - (बोलो तनलोः) ददाया मेठई।

रतन - चान मेठई?

इपिल - पास मेठई।

सिबिल - (बोलो तनलोः) हे दो फर्स्ट डिबीजन तेम उड्डुङकना।

रतन - ओकोय उदुबद्बेना?

सिबिल - बाउञ मसी अद् बिरसा तको जगर तइना। बाउञ दोए ओमद्लेआ।

रतन - नाअःदो अञ?

इपिल - हे ड़ोः।

रतन - (गेल टकाए सबाकिन तनलो) ने तोबे अबेनगे किरिंञ जोमेबेन।

इपिल - (तेला तनलोः) दे तोबे।

(इपिल अद् सिबिल पोयसा तेला केद् चि रसिका समकिङ उड्डुङ जना)

सनिका - (बोलो तनलोः) बबुआ रतन! इपिल तकिङ दो चेनअः किंञ रसिका जना?

रतन - अब्बा गा अञ मेट्रिक फर्स्ट डिबीजन तेंञ उड्डुङ जना। एना अयुम केदचि मेठइ किङ हटि लुठूजना। अञो मेठइ जोमतेबेन मेनेःआते गेल टकाञ ओमद किङा।

सुकवरो - (बोलो तनलोः) तोबे दोआ बाबू इसु रसिकारेअःकजि। मसी एगते जगर लेद्ते अञ दोञ इतुवना; बन दो अञ दोजइतरेन भुरुंगी[9] चेनअःञ मुण्डीया?

सनिका - हे अञ दो दोन्दोःअ अब्बाते मेतञतना लिका दो अञतआ हिजुःकोःमे। चेनअः मेनतेञ कुलीजअःइचि उदुबञतनआए-दोन्दोः मेट्रिकए उड्डुजनअःए, एना नुतुमते इलिकोलङ नू कोःअए मेनजदअःए।

सुकवरो - कुड़ी होन को दो बबु एटअः ओड़अःरेअः जु'ला को ओङा। चेनअः मेनते इनकुबु इतुरिका कोआ? कम नेल जअःञ अञ मोयोदो कञ नेलुद जनते मोद् होड़ अमीना कनअःए, मोद होड़ दो साएरनिः तनिः ओड़ोः मिद् होड़ पियुना कनाए।

रतन - एना को एअङ मरि सेंड़ाको तनअः। नाअः दो कुड़िहोन कोओगे इतु लगतिञा।

सनिका - तोबे अम चेनअःम सनङ तना?

रतन - अञगअःमोने मेनअःकाबु कसी बण्डाअः, काबु सिम सुकरिअः।

सुकवरो - तोबे चेनअःबु चिकाअः?

रतन - अञ अद मइ अयर तेरअः होरा उदुबालिङबेन।

सुकवरो - अयर तेरअः होरा? कञ सोन्तोरजना?

रतन - बरनकिगे अयर तेलिञ इतुकोअः।

सनिका - अमा बाबु, अयरते इतुन रम्बल गेअम मेनजदा?

रतन - तोबे काबु रसिकाना होकाआबु।

सनिका - अम सिदा सोन्तोरलेनमे एनाते उड्डःएनमे।

रतन - चेनअःञ सोन्तोरेना?

सनिका- गोटलिरे इतुन रम्बल गेअ? सहर सेनलेनमेतो, तोबे सेंगेल दअःकोम मुण्डीया! सहर रे चिमिनखरचा मेनअः मुण्डीतदम?

रतन - हे तोबेबु होकअः। कसी बण्डा रे खरचा बनोःआ। सहर रे खरचा मेनअःअञ गपा गुजरातते कमि नला तिंञा। पोयसाञ कुलाबेना, बोकोञ कुड़ी इतुइबेन।

सुकवरो - होंआ बबु, एनका दो का।

रतन - चते का? अञगअःसोबेन सोंगे को अपन दड़िको उड्डःतना अद अञ फर्स्ट डिबीजन रे उड्डङगकोःते दुब् हपेयाकन गेआञ?

सुकवरो - हों एनका अलोम जगरेआ, रसिकन हुलङरे नेका हेटेद्-पेटेद् दो का। (सनिका सआ अरिद् तनलोः) अमो होनकोवअः कजि कम सोन्तोरोअः।

सनिका - चनअः कञ सोन्तोरोअः?

सुकवरो - चेनअः कञ सोन्तोरोअः? होनको बए अम कम इतुअना।

सनिका - हे अम एस्कारेम इतुवना।

रतन - अबेन मर एपेरङबेन, अञ ओड़अःतेञ उड्डङोतना। (सेनोः तनाए)

सुकवरो - होंवा बबु, कञ सेना रिकामा। (सब् रुड़ाजअःइया)

रतन - चते कम सेनारिकाञ?

सनिका - (बपएतनलोः) हेया बबु, अञगे जाअः उड्डुःरे कञ ठउका जदा। तिसिंञ कबु एपेरङगा। मर तिसिंञबु पोरोब् कोअः। अयरतेबु नेलेअ चिलका बएयोःआ एनकागे।

सुकवरो - तोबे पोरोब् रेअः चेनअः कोम तिहाजदा? तिसिञ दो जा लेकाबु परोम केआ। अमोः दोन्दोः तको ओड़आ तेमा। गपा मेयङ रतनअः ममुतकोओबु रअः लेकोआ।

सनिका - हे तोबे ठउका गेम कजिलअः।

दनङएते - रतन मेनअःइया?

रतन - ओकोए दोन्दोः? देला मेनअःञा।

दोन्दोः - (बोलो तनलोः) चेनअः कोपे जगर तना?

सुकवरो - चेनअःले जगरा बबु! अपे उड्डुङ जनअःगेले जगर तना। कोतेम हिजुःलेना?

दोन्दोः - अञो एनागे जगरञ हिजुःतना, अञगअःअबाए मेताञतना चि सनिका अपुम रअः अगुलीमे सेकड़ा, अद् एन ओड़अः अमअःएयङ तको सोबेन को हिजुःका। लिका आबु ओड़अः रेबु जोम नु'आ।

सुकवरो - ओड़अः बरिद् चि बबु? आपुम बा'रि सेनका।

दोन्दोः - अञगअःएयङ अबा तकिङ कजि कुलतदा।

सनिका - हे तोबे दोलाबु।

(दनपलअः दपलोः तना)

इपअः उनुदुब

(हतु मुण्डा अएगाअः ओड़अःरे टकाए लेका तना)

मुण्डा - मोड़ेया कसिञ अकरिञ तद्कोअः।

मुण्डा बुड़िया - (बोलो तनलोः) चनअःम बड़ङ बड़ञो तना?

मुण्डा - अमा बुड़िया, मोड़ेया कसिको अकरिंग जना, एनागे टकाञ लेका तना।

बुड़िया - हे नाअः दो मर मदुकम पिड़ीतेम। मो'द चण्डुःरे दोम चबागिड़िया ओड़ोः एना'ते बण्डा अकरिञ कोम।

मुण्डा - का'न बुड़िया, एनका दो का। रेगो कोड़ा कम नेललिःआ? नू तेगे-ए सेन होरा केदा।

बुड़िया - का दो अड़ोः अमो देरङ एनकाए मेगे।

मुण्डा - होन कोड़ा मसी मेट्रिकए (पोरसोंद्)[10] उड्डुञ्जना, अयरते इतुकोःका। सिबिल मरंग इतुसइःरिया , गपा कोते इनिःओ मेट्रिक-ए उड्डुञोःआ। टका दोलङ दरकारो गेअः?

बुड़िया - का दो मोयोद्-मोयोद् तेम अकरिञ के'द कोते? इमनङ कसि कोअः टका हुड़िञ गेअ?

मुण्डा - हुड़िञ चनअः हुड़िञा? बार हिसी मोड़े हजार।

बुड़िया - तोबे दो! कुम्बुड्डु जअः को नम केलङ रे दो?

मुण्डा - कचि बुंका रेलङ जोगाओ हपेतअः?

बुड़िया - ओको बुंका रे?

मुण्डा - स्टेट बैंक रे।

बुड़िया - अद् जन रे दो?

मुण्डा - भुरुंगी एरा, ओकोते तेम बुड़िया तना? बुङकारे चि अदोःआ? कुम्बुड्डु रेरेग् डाकू कोःएते बनचाओन मेनते एन रेगे समड़ोम को जोगाओजदा। समड़ोम बुझाओःतनम? सोना। पहंड़ अएगअः समड़ोम एन बुंका रेगे' जोगाओकदा।

बुड़िया - आं! एनागेञ बकुवाओ तइना चि पहंड़ तअःरे समड़ोम मेनअःको मेनेआ एनरेओ कुम्बुड्डु डाकू को इनिअः ओड़अःकाको बोलोतना।

मुण्डा - अमोः जाअःम नेल होरा तइनाचि को तेबअःका? जा'इमंनग अञोञ टोगोःअ?

सनिका - (दनङअते) मेनअःमचि हले मुण्डा?

मुण्डा - ने बुड़िया, बोदेगे सेकड़ा बोक्सारे जोगाओ बपद् तम।

सनिका - (दनङअते) मेनअःमचि बङमा? कम हइजदा?

मुण्डा - मेनअःञा, मर देला बोलोमे।

सनिका - (बोलो तनलोः) मर जोअर।

मुण्डा - जोअर! तोबे कोतेम हिजुःलेना?

सनिका - कोतेञ हिजुःअ चि? होनिंग कोड़ा रतन मेट्रिक-ए उड्डुञजना। (पोरसोद्जना)

मुण्डा - हे, एना होनिञ कोड़ा मसी-ए उदुब् लिःञा चि फर्स्ट डिबीजन ते उड्डुञजनअःए। एरङजाअःइयञ अमदो मिण्डीम चन्दी केना? अमोः देरडञ इतुनगेञ कुललेदमा; थर्ड डिबीजन तेम उड्डुञाकना? इतुसई रेम चोथाओ केना?

सनिका - अपन-अपन सेंड़ांगे अड़ोः।

मुण्डा - चान अपन-अपन सेंड़ां? बनोःको ओड़अःरेन को फर्स्ट डिबीजन , मेनअः तनको थर्ड डिबीजन! मरति कजिलेम?

सनिका - हे मर, उड्डुङ दोए उड्डुङ जना चि? काए उड्डुङ जनरे दङ होनङ?

मुण्डा - उड्डुङदोए उड्डुङजना। हे तोबे, ने कजिकोलङ होकालेआ। मरति कजीम कोतेम हिजुःलेना?

सनिका - कोतेंञ हिजुःअचि? रतन अयर ते-ए इतुन-ए मोनेजदअःए।

मुण्डा - तोबे दो ओड़ोःए सेनोःका।

सनिका - सेनोः दो ओड़ोःए सेनोःका; मेनदो चिलका लिंञ कुली'या?

मुण्डा - चिलका लिंञ् कुली'या कञ् सोन्तोरजना?

सनिका - अलिंञ तअः दो टकाओ बनोःआ, एनातेगे इपिलो इतुसई लिंञ होका कअःइया। रतनअः सोंगे को सोबेन अयरते इतुन तेको तना। गोटलिते इतुन कबेन कुलिंञ रे दो गुजरातते कमिनलञ सेनोःअए मेनजदा।

बुड़िया - (उड्डुङ तनलोः) एना दो अड़ोः ठउका देरङए जगर जदा। मर जोअर।

सनिका - जोअर! ठउका दो ठउकागे जगर जदअःए मेन्दो टुट पुंजिया होड़ोकिङ अलिंञ दो, चिलका लिंञ चिकाइया, कलिङ मुन्डी जदा।

मुण्डा - टका देरङ बनोःआ, ओते पिड़ी दो मेनअः? कजि'यको मेनअःरेदो हटअः-हटअः; बनोः रे दो बटअः-बटअः। अलिंञ दो टुट पुंजिया होड़ोकिङ मेनजदा अद् होला-होंदेर दोबु पोरोब् जना। एनाओ कसि गोःए कीते। इनिःगेबेन अकरिञ किःरे का बए जनतेःआ होनङ?

सनिका - हे दो, हेगे देरङ? रसिका रेअः जोरते कलिंञ उडुउ तेबअः दड़िजना।

बुड़िया - तोबेदो चनअः बेन उडुउ जदा?

सनिका - उडुः चनअःलिंञ उडुउया? ओते गेलङ बन्दर तअःमेनेअ लिंञ उडुःआकदा। एनागेञ हिजुःआकना!

मुण्डा - ओकोअः ओते?

सनिका - बरु पिड़ी बन्दर लिंञ मोनेयाकदा।

मुण्डा - चिमनङते?

सनिका - गेल हजार लिंञ मेनजदा।

बुड़िया - चिमिन बोछोर (सिरमा) मेनते?

सनिका - अपि सिरमा मेनते।

मुण्डा - एला, एनादो रुगड़ी पिड़ी तनअः जेतअःओ का होबाओःआ।

सनिका - हे तोबे नीम चवड़ा।

मुण्डा - एनाओ देरङ एनकागेआ। अपि सिरमारे दो हजार टका रेअः सूदओ का उडुंगोःआ।

सनिका - अलोबेन एनकाया।

बुड़िया - का तोबे, बन्दर दो अमगे देरङम मोनेयाकदा? जाए तअःगे सेनोःम नेयागेको कजियामा। मेद् जपिद् केद् दो ककोदेरङ कजि'या?

मुण्डा - सोले गड़ा ओमालिंञमे, एना गलिदअःलिंञ पतिःआ।

सनिका - एना दो हले, अले ओड़अः बरिद्रेअः जोम दो एनरेगे मेनआ। कञ दड़िःआ।

बुड़िया - तोबे जांए एटअः कोगे नमकोम। (सनिकोए उड्डुःतना)

सनिका - (अएः अएःरेगे) जांए दो ओकोय ञ नमकोःआ? पहंड़ दो काए हे'या। मुण्डा दो होलागे मोड़ेया कसिए अकरिंञ कद् कोवआ।

मुण्डा - चनअःम उड्डुउ तना?

सनिका - चनअःञ उड्डुःआ? जांए जेताय दो ओकोय ञ कजियाकोआ?

बुड़िया - अम कजि अयुम मेम। सोले गड़ा का'दो जुबिलालोयोङ ओमालिंञमे।

सनिका - (अएः अएःरेगे) जोम कले होबाओःरे दो कमिनला कचिंञ उड्डुओःआ?

मुण्डा - चनअःम मेनजदा?

सनिका - हे तोबे सोले गड़ागे, मेनदो गेल मोड़े हजार।

मुण्डा - अमिनुङ दो कलिञ दड़िआ।

सनिका - हे तोबे गेल अपि हजार टका।

मुण्डा - (अएःअएःरेगे) इमनुङरे दो जाअःजंजि बनोःअ। दअः लोयोङ तनअः टकाओ जोगाओ कनोःआ सूदो जद्कागे नम इदियोःआ। (अयुमेलेका) हे तोबे; जू जांए ओल-बाल को सब् अउकोम।

सनिका - ओकोय ञ सब् अउःइया?

मुण्डा - बुदराम कजिलीम। इनिः दो कोट-कचइरी कोए सेना।

सनिका - हे तोबेंग रअःअउ लिःआ। (सनिकाए उड्डुओःतना)

(दनपलअः दपलोः तना)

बिरअः चिटिद्

मिदअः उनदुब्

(सनिकाए हसुतना)

सनिका - हए! हु-हु-हु-हु-हु। चान रो'गो नम तअःञा? मुण्डी बनोःआ। (हकओतनलोःते) इपिल रे दे न मइ दअःअगुअञ मे।

इपिल - (दनङएते) चनअः?

सनिका - दअः न मइ अगुलेम तो, नुए दअः।

इपिल - (दअःअगुएतनलोःए बोलोतना) अब्बागा बिरिद् मे तो। (बिरिद् देंगाजअःइया) ने तोबे। (दअःए अनुजअःइया)

सनिका - (दअःनुकेद्) गितिःतञ मे। मड़िते गितिःजअःइया ; एयङ तमअः नअः जकेद् काएः हिजुः तना?

इपिल - को सअःए सेनाकना?

सनिका - पटा भगत तअःगे देरङ।

इपिल - नाअःदो जाअः अगुजअःइया।

सुकवरो - (दनङअते) नेःलङ तेबअः लअः। (बोलो तनलोः) मर न मइ मचिला को अगुएमे।

(इपिल ओड़अः बितर मचिला अगुए बोलोतना)

पटा भगत - (बोलो तनलोः) ओड़अःदो सिंड़ीःगे टोरोःतना।

सुकवरो - चनअः सिंड़ीःगे?

पटा भगत - हे। नेया दो नगे एरा कोअःकमि लेकाञ टोरजदा।

(इपिल मचिला अगुकेद् ओमइतना)

इपिल - मर जोअर।

पटा भगत - जोअर। हसु बिरिदाकन चिमिन मा लेका होबाओःतना?

सुकवरो - मोंद् चण्डुः होबाओःतना।

पटा भगत - अंद पे हपेयाकना?

सुकवरो - हपे दो कले हपेयाकना। बोइद कोले नम इदिको तनगेआ रनु जियंड़ कोले ओमइतन गेआ, मेंदो टोगोःरेच?

पटा भगत - मोंयोंद हटअः ओम लिंगबेन अद् गुड़गु दिरि ओड़ओ मिद् चिपुद बाबा।

(इपिल हटअः गुड़गू दिरि अद् बबाए अगु जदा ओड़ओ पटा भगत-ए ओमइतना)

पटा भगत - अपिया सरजोम सकम अद् अपिया मद चरि।

इपिल - सरजोम सकम अद् चरि?

पटा भगत - हे न, मइ सरजोम सकम अद चरि। सरजोम सकम मेनअः रेदो हरियर तेअः कारेदो रोहोड़ तेयअःओ बइयोःआ अद चरि दो मद रेयअः।

इपिल - सकम दो रोहड़ कना।

सुकवरो - का न मइ होलातेर हुलङगे पीटियातेंञ अगुवाकदा। कुड़ा रड़ालेम तो। का रोहोड़ाकना।

(इपिल बितर ओड़अः बोलो जनते अगु जद्अए)

पटा भगत - मोयद खपरअरे सेंगेल अद् ससङ गुण्डा हुड़िंञ लेका।

(इपिल ओड़ोः रचाते उड्डङजनते केचोःए अगुजदा, बोलो तनाए एनलोः पटा भगत उपुना सरसरते जोका तनलोः चरिए पेटेःजदा, इपिल एनलोःते ओड़अः बितर केचोः सब् केंद बोलो तनलोः)

सुकवरो - का इंड़ि कना मइ। तोरोःए तेंञ तोपा'कदा। इड़िंजन रेदो सान तिञलेम।

(इपिल ओड़अः बितरएते केचोःरे सेंगेल अद् ससङ गुण्डाए अगुजदा। पटा भगत गुड़गु दिरिते हटअःरे बबाए इरिदजदा अद हेड़े ओङ परका जदा अद् पेटेः चरिते चउलीजङए होटअः बड़ाजदा)

पटा भगत - (केचोःरेयअः सेंगेलरे ससंग गुण्डाए उरुबजदा सूकुलतन चि देंवड़ां तनअए)

तोल मेयञ, इदि मेयञ,
सेटेर मेयञ, मंड़ा बुरुते।
कंजु मेयञ, संजु मेयञ;
तोपा मेयञ मंड़ा बुरुरे।

फू-फू-फू (सनिका सअः मोंद सनएदते सुकुल-ए ओङजदा। ने देंवड़ां अपि साए कजिजदा) निकु दो अपे सोले गड़ा रेन नागे एरा कोगे देरङ। इनकुगे नी को नमा कअःइया।

सुकवरो - सोले गड़ा रेन नगे एराको?

पटा भगत - हे, एनारे जुबिला मेनआच?

सुकवरो - हे मेनागा।

पटा भगत - इनकुगेको हड़ांकना। ओकोएजाअः जानअःपे एरङ तद्कोअः।

सनिका - हए। हू-हू-हू-हू-हू- ओकोय चनअःकोए एरङ कोअः?

सुकवरो - हों, अलोम जगरेआ, लगाओ अम।

पटा भगत - जांए दो जानअःपे कजि तद् कोअः एनातेगे को हड़ांकना। अद् अको दो सोजते काको दड़िआतनते एटअःको अचुतद्कोअः।

सुकवरो - ओकोय चनअःए मेताकोअः? बबु कोड़ा रतन अयरतेंग इतुकोअः मेनतनचि एना ओते दो मुण्डा तअःले बन्दर

तदा अपि सिरमा मेनते अद् ने कलोम पुराओअः।

पटा भगत - नेःए तोबे, एनतेगे इनकु जोम कको बोसाओःतना। हेरोःइरोः कोरे अबेन दो हेन्दे सिमबेन बोंगाजद्को तइना। मुण्डा दो चान गरज मेनअः? हेर तनाए, इर तनाए।

सुकवरो - तोबे चनअः चिका लगतिञ?

पटा भगत - इनकु बए होबाओःआ।

इपिल - चिलका को बएःओआ?

पटा भगत - इनकु दो हेन्दे सिमगे देरङ को नामा?

सुकवरो - इमनुङरेगे ने दुकु हरोबोआ।

पटा भगत - कोरेः बएओःआ? सिदा रेगे अइंग कजिलअः नगे एराको अको दो सोजते काको दड़ियातना एनाते एटअःको अचु तद् कोअः।

इपिल - एटअःको अचुतद्कोअः? मने?

पटा भगत - हे न मइ, इनकुअ सोंगोति मेनअः दअःदुल सड़गिरेन बोंगालोःते?

इपिल - दअःदुल सड़गिरेन बोंगालोःते? एला अञ दो उमेन नड़कनचि

लिजअः नूरा एनतअःगेंञ सेना;अञ जे काएः सबींञा?

पटा भगत - हनिअः चनअम बगड़ाओकदा? अद्ए सबूमा? इनिःम मनातिञ तनरे, इनिःमनातिञेम होका जनरेगे हंड़ोआ। सोंजोको दो मोसा-मोसा इनकु केपेलेञ सेंड़ाको सबेया, इमतुंङ जांएगेको नमकोअः।

सुकवरो - तोबे चनअःचिका लगतिञा?

पटा भगत - हों कजि दो कञ चबाकदा। दअःदुल सड़गिरेन बोंगा दो पहंड़-ए बए तना अद् अपे पहंड़अः लतर रे मेनअः पेआ।

हली-गरजी रे पहंड़लो देपेंगा मेनअःगेअः।

पटा भगत - एनाते दअःदुल सड़गिरेन बोंगा आए दो काएः दड़ितना, मेनदो नगे एरा कोलोःए सोंगेअकनते इनकुओ कागे मेनेअः दो काएः कजि दड़िअतना। एन लेकातेगे अएंगअः सोंगे तोलको बेडा रेन दरहा बोंगाए अचुतअःइया। इनिःगे सिपुद् जद्पेआ।

सुकवरो - अहां। एनका कजि मेनागअः? एनातेगे रनू जियंड़ चि सिम सुकरीते का बएओःतना, जेता बोइद चि भगत कको दड़िअतना।

इपिल - एन बोंगा दो चिलकाए बएओःअ?

पटा भगत - इनिः दो दरहा बोंगा तनिः रम्बलते काएः अयुमेःआ।

सुकवरो - एनरेओ?

पटा भगत - इनिः कसेया बकरा का बोंगालिःरे दो काएः अयुमेआ।

सुकवरो - रिंड़ी-कडी तेदोले पेरेःगिड़िअकना ओड़ओ हेन्दे सिम, कसेया बकरा? मर हेन्दे सिम दो जा लेकाते-ए नमोःआ मेन्दो कसेया बकरा?

पट भगत - उदुबे तेअःदोञ उदुबद् बेना, अबेन नेलजोमबेन। रोगहाबेन नेला चि बेन नेल गोदिया, अबेनअः उड्डुउगे।

सुकवरो - बएःदोड़ोः बएगे मेनअ, मेनदो कसेया बकरा तअःरेगे लिञ हतम्बअः कना।

पटा भगत - हे तोबे, उदुबेतेअः दोञ उदुबद्बेनगेआ अबेन उड्डुउ जोमबेन। (केचोः सब् केद् ओड़ोः ससडए उरुब् जदा, सुकुल तनची अपिसा सनिका सअःए ओडजदा)। मर नाअः दो नेया चिमि[11] बहिर रे होरा कोनोटोडरेञ जोगाओ तअः।

(सेनोः तनलोः चउलि जडो सरजोम सकम रे पटुड़ा इदिजदाए)

(दनपलअः दपलोः तना)

बिरअः उनुदुब्

(इपिल अद् सुकवरो होन-होपोन किङ जपगर तना)

इपिल - एयङगा।

सुकवरो - चनअःगा?

इपिल - अञगअः अब्बा नङ दो चनअःलङ चिकाया?

सुकवरो - अमा मइ सेंड़ांओ अद गिड़ियाकना। बउम-दो-बउम, कोरे रांची सहर रे कोनेयाए नम किआ। बुगी हनरते होंजरते तकोए नमकेद कोःआ। नाअः दो ओनोल सकम रटि काएः कुलेःआ।

इपिल - हे। अएगअः सोंगे बिरसा तकोगे देरंङ को जगर तइना-रतन दो किसंड़ ओड़अ रेन कोनेयाए नमतअःइया, अबु सअः चि हेतया?

सुकवरो - नेयाजाअःञ अगम तद् रेदो कोकोनो अयरते इतुन् कञ कुली'या होनङ। इनिः मेनते ओते पिड़ीबु बन्दर तदा। मरति नअःदो चनअःते कसेया बकरालङ नमी'या?

इपिल - एनरेओ खरचाओ गेआ। अञगअः अब्बा रानु ओड़अः चि अस्पतालजाअःलङ इदि लिःआ? हसुतनको अस्पतालेते बुगीजनतेको हिजु:तना; कसेया बकरा दड़ेंलीरे दो इदु?

सुकवरो - अस्पतालो मइ चिलका देरङलङ इदी'या? ओते पिड़ीबु बन्दरतदा। ओते पिड़ी का उदुब् लेकोरेदो ओकोए पोयसाको ओमेआ?

इपिल - एयङगा जानअः दो रिकागे होबाओःअ। मुण्डा ओतेबु ओमाकअःइया। इनिःञ सेननम लिःआ। बन्दर रेअःदिपलि

गे देरङ मोंद बोछोर अयरते इदीया? इनिः का दो पहंड़ञ सेन नमीया।

सुकवरो - इदु मइ, मुण्डा दो काएः हे'या। पहंड़ दो ओड़ोःगे कएअः। इनिः दो जइतरेन कुटु। जोमनु मेनते रअःइमे सेकेड़ाए निरअउया, पोयसा देंगा मेनलिरे दो बोःए कोटे-कोटे'या। सोया तन मण्डी काको गिड़ीया एनकन किसंड़ तनको।

इपिल - एण्डेयो मर अञ सेनउकोगिआ।

सुकवरो - अमगे देरङ उड्डुःबएलेम। हों अमअःअब्बञ लेल लिःआ, दअःकोजअ तेतङ जाइःरेदो। (ओड़अः तेःए बोलो तना)

गंगी - (दनङअते) इपिल माइ। मेनअःमाचि?

इपिल - ओकोय? गंगी दइ?

गंगी - (बोलो तनलोः) हे न।

इपिल - मर देला।

(दुबू मेनते मचिलाए ओमाइतना)

गंगी - अयुमाकदंइग अमअः अब्बाए हसुतना?

इपिल - हे दइ, मोंद चण्डुःएते लअः जनाए, बुगी-गे-काए बुगीओःतना। इदु चान हसु नम तअःइया? रुआ रअः मुण्डी गे बनोः।

गंगी - बइदीको, भगत को कपे नम बड़ाजदू कोआ?

इपिल - नम चनअःकले नम कोःआ? बइदोले नमकेःकोआ, भगतो ले नम केःकोआ, ओकोय चनअः मेनजदा एना ले रिका जदा, सिम मेने सिमको दंड़ेओःतना, बकरा मेने बकरा, सुकरीम मेने सुकरी, न दंड़े अयुम तन, न रानु टोगोःतन।

गंगी - उलीडीह रेन पटाभगत कपे नम लिःआ?

इपिल - ए दइ, चनअःम मेनेआ? इनिःओले नम लिःआ, होला होलागे' हिजुःलेना।

गंगी - चनअःए मेनकेदा?

इपिल - पटाभगततअःकजि, नगे एराको अकोदो सोजते कको दड़िआ तना, एनाते दअःदुल सड़गिरेन बोंगाको उसकुरा कअःइआ।

गंगी - दअःदुल सड़गिरेन बोंगा दो ना मइ पहंड़ए बए तना?

इपिल - हे! पहंड़ए बएतना अद् अले पहंड़अः तबेरे मेनअःलेआ, हली गरजी रे देंगा-देपेंगा दो मेनअःगेआ। इनिः नगे एरा कोअः कजि दो काएः अंदुल दड़िअतना एनाते अएः अलोए चिटाओ का मेनते थोलको बेड़ा रेन बोंगाए अचुतअःइया।

गंगी - हे तोबे एनातेगे हेड़ाओःतना।

इपिल - इनिःओ कसेया बकराएः नमतना।

गंगी - तोबे, कसेया बकरा ओमाइपे।

इपिल - चनअःतेले ओमाइया? बरु पिड़ी, नीम चवड़ा, सोलेगड़ा सोबेन ओते पिड़ी दोले बन्दर तदा। जोबोला लोयोङते जां लेका बेसा सेसेनतना। बइदीको, भगतको, सिम सुकरी चि मेरोम ले ओम चबा तद्कोःआ। चनअः तेले चिकाना?

गंगी - हे न माइ, मोयोद् होरा मेनगअः।

इपिल - चनअः?

गंगी - अमदोम इतुवना, अञ दिल्ली रेञ कमितना।

इपिल - एना दो अञ अयुमाना।

गंगी - बोड़े मरंग बेलडिञ ओड़अःरेञ तइनतना। बर होड़ होन किनञ नेला अद् ओड़अः रेअः कमि कोञ कमि बड़अः। मंडी उतु दो गोमकिञ बुड़ियाए बएजोमा।

इपिल - नला दो चिमनुङ को ओमामा?

गंगी - कमि दो जद्का कञ टोगोःआ। होनकिङएञ नेला, हुपुड़िञ गेअःकिङ। गोमकिञ अद् अएगअः ओड़अः होड़ो; उपुन होड़ोगेआको। बार हजार चण्डुःरेकिञ ओमञ तना।

इपिल - जोम नू दो?

गंगी - अकिङअःगे। उयुन तुसिञओ अकिनङअःगे।

इपिल - तोबे दो दइ इसु सुकुरे मेनअःमा।

गंगी - हे दो, हेगे। इसु सुकु रे मेनअःञा। जांतअःको सेनोआ अञ ककी बगेञा। अकोअलेकातेगे जयपुर को, गोवा को, इहिमलेअङ बुरु कोञ नेलअउकेदा।

इपिल - तोबे दो इसु सुकुरेगे मेनअःमा, अञ दो इहिमलेअङ बुरु अयुम बारिञ अयुमकदा। इसु मरङा को मेनेअःा अबुअः बिरिन्ता बुरु लेका का?

गंगी - कागे न मइ, बिरिन्ता बुरु दो हिमालय सनमङरे दो जेतअःओ बनोः। चिमनुङ चिमनुङ बिरिन्ता बुरुको जोटोओ लेरेओ इमनुङको होबाओआ। संगिलते का संगिल तेबगोःआ, जोमते; न कोंजेते का नेल टुण्डुःआ।

इपिल - तोबे दो इसु मरंग मेनअः का?

गंगी - मरङगिआ, सोबेन सअः रतंग बिलाकना। सिंगीरअः रांप टोगोःतन रे दो नेल सुकुःआ।

इपिल - रतङ मेनअः रे दो रबङ गेआ?

गंगी - अलोम कजिःआ! ने लिजअः किचरि को एनतअःरे काय कमी'या। उनी सोनोःको दरकारोःआ, कमड़ा को, रजाई को लगतिंगोःआ ओड़ोः दो चनअःइंग उदुबमा?

सुकवरो - (दनङअते) देला मइ, चिमिन बेन जगरा? अयुबोः तना, दअः अगुतेम।

गंगी - मर तोबे एटअःहुलङ कोलङ जगरा।

इपिल - हे अञो, पोयसा दड़ां मुण्डा, पहंड़, कोतअः सेन तइकेना। नाअः दो गपा कोतेञ सेना, दअःञ अगुलेआ।

(अपन-अपनकिन् उड्डोःतना)

(दनपलअः दपलोः तना)

इपअः उनुदुब्

(सनिका ह'य हयजदअय; ओड़अःरे जांएओ बङकोःआ)

सनिका - हय'''! हय'''! हय'''! ओको बोंगाए नमाकअःञा? रानु जियंड़ का टोगोतना। सिम चि सुकुरी, चि मेरोम को बोंगाओः तनरेओ का बएयोः तना।

इपिल - (बोलो तनलो) अब्बागा, ससंग गुण्डा हेर चि बोंगा बुरुबु होकालेअ।

सनिका - तोबे मइ चनअःबु चिकाया? सिञबोंगा मनतिञबु होकाया दो किरतानबु बएना? हय'''!

इपिल - कागे अब्बा, सिञबोंगा दो काबु बगेइया।

सनिका - तोबे?

इपिल - ने बोंगाको बएबु होकालेःआ; रानुओड़अबु (अस्पतालबु) सेनकोःआ।

सनिका - का न मइ; जानअःगे रिकाएबेन अञ बुगी कजिञ बुगीओःका। न दोञ गोजोःतनगे न बुगीलेकाञ जीदोः तनगे। ससति एसकर रिञ ससतियोः तना।

इपिल - जां लेका सा'तिंगेम अब्बा, अस्पतालगेबु इदिलेमा।

सुकवरो - (बोलो तनलोः) चनअःते मइ लङ इदीया?

इपिल - अञ उपाय अन्तर कोःआ।

सुकवरो - चनअःम उपाय-अन्तरेःआ?

इपिल - मुण्डा तअःञ सेनकोःआ।

सुकवरो - सेनकोःमे, मेन्दो असरइबनोः।

इपिल - इनिः का'रेदो पहंड़ञ सेन नमीया।

सुकवरो - इनिः दो मइ ओड़ोःगे काएः हे'या।

इपिल - चते काएः हे'या?

सुकवरो - इनिःदो कुटु किसंड़ च। फउदरी रे ओतेए जिताओ जनतअःएतेदो ओड़ोःगेको कुटुनजना।

इपिल - चतेको फउदरी केना?

सुकवरो - पहंड़अः नुतुमते डली कतारी मेनअः।

इपिल - डली कतारी दो चनअः?

सुकवरो - पहंड़ बोंगा बुरुअए, हतुए बएया, जा एटअःरेन बोंगा को हतुरेन होड़ो कोके अलोको सिगिदी कोका मेनेःअते बोंगा बुरुआ। एना मेनतेगे इनिः ओते नमेःआ एनागे डली कतारी को मेतअः।

इपिल - तोबे अबुचते थोलकाबेड़ारेन दरहा बोंगाए नमकेःएबुआ?

सुकवरो - एना दो मइ अबुअःका सेंड़ाते।

इपिल - अबुअः का सेंड़ाते कञ सोन्तोरजना?

सुकवरो - सोलेगड़ा, अबु का बन्दर-ए लगतिञ तइकेना। बन्दरजनरेओ नगे एराको बए मेनते ससङ गुण्डा रटि कबु हेर केदा। कम पहमेआ अमअः अब्बा जोबला लोयेाङ चेतन सोलेगड़ा लतर केवरा सुबारे-ए बोंगा तइना?

इपिल - आं एना दो तिसिञ अञ मुण्डी जदा।

सुकवरो - हेरोः चि रोवा, चि इरोः कोरे पहंड़ बोंगा सिदा लेःआ, कारे

ओकोए को सेकड़ाकनगेअ, चि ओकोएअः बबा जरोमकना तोबे दो इनिःगे बोंगा मेनते सिम ओमकेद् पहंड़ए बोंगा रिकाइयाः।

इपिल - एना दो एयङ कञ नेल अयुमा कद् तइना।

सुकवरो - दअःदुल सड़गिरे पहंड़गे बोंगा तनते, एनरेन बोंगा अबु काएःजेताबुतना। एनरे लिजअःबु नुरा तना, किचरिबु सोबोद तना, उमेन नड़कन तनाबु। जु तो बमड़े डुबा ढुंकुते किचरि सोबोद् चि उमेन नड़कन, एन रेन बोंगा सेकड़ागे नममेःआ।

सनिका - हय''' । हय''' । हय''' । जगर बेन ठेसाओ अकदा जानअः रेओ दो उपाय जोमबेन।

सुकवरो - उपाय अन्तर कोरअः गेलिञ जगर तना।

इपिल - तोबे मुण्डा तअःञ सेन लेना। एनतअःरे कजि का बएओरेदो पहंड़ञ सेन नमी'या;इनिःओ का' रेदो अबुअः पड़हा रजाञ सेन नमी'या।

सुकवरो - सेनउ कोःमे, कमि दो कागे बइओःआ।

इपिल - एयङगा ; अलोम हुड़िञ जी'ना। सेनउ कोःअञ।

सुकवरो - जु तोबे। (इपिल सेनोः तनाए)

(दनपलअः दपलोः तना)

उपअः उनुदुब

(नेते हेनतेअते इपिल अद् गंगीकिङ हिजुःतना)

गंगी - अमअःगेञ उड्डुःतइना।

इपिल - चनअः दई?

गंगी - अमअः अब्बा जा'इमनुङए रम्बलोःतना चि का?

इपिल - चनअःए रम्बलोःआ? महुरा कोजअःओमाञपेञ गोःएगू हपेया कनगेःअए मेनेआ।

गंगी - दुकुते हसुते लगाजनरे कजियोःगेआ। अम न मइ रानुओड़अगे इदीलीबेन।

इपिल - उड्डुःदो लिञ उड़उ तना मेनदो पोयसा तअःरेगे लिञ हतम्बअः कना।

गंगी - मुण्डा तअःञ सेनकोःअम मेन?

इपिल - हे दइ, सेन केनाञ।

गंगी - चनअःए मेन?

इपिल - पोयसा बनोःअए मेन। पहंड़ तअःञ सेनकेना इनिःदोए मेन- ओते दो मुण्डा बिङ ओमअःइया, अंञतअः पोयसा असिम हिजाकना? मुण्डा पोयसा काएःओमअदिंञ? पड़हा रजा तअःञ सेन केना। इनिःतअःदो अञअःसनमङरेगे मिसिते पोयसाए इदि केदा।

गंगी - तोबे नअःदो चनअःम उड़उतना?

इपिल - नअःदो चनअःञ उड्डुउया? होरागे का नेलोःतना।

गंगी - मिअद् होरा मेनअः मइ।

इपिल - चनअः?

गंगी - दोला कमी नला दिल्ली ते।

इपिल - हे दइ, सेन दोञ सेन तेःअ मेनदो अञअः अब्बाए बुगी लेन रे देरङ?

गंगी - एना अलोम उड्डुउआ। अञ पोयसाञ ओमामेःआ। रानुओड़अःते इदी''बिङ। अञअः नाअः छुट्टी मेनअः बर अठअउरी। एन लोःदो अमअः अब्बाए बुगीयोःआ।

इपिल - अञः अब्बाए बुगी जनेतेयो दिल्ली चिलकञ सेना? अञतअःदो सेनोः तेअः पोयसा बनोःआ।

गंगी - एना अलोम उड्डुउआ; पोयसा अञ ओमामा। दिल्ली रे कमी केआते अञ पेरेःगञ में। तोबे जु सम्पोड़ोन बेन, अञ पोयसाञ अगुलेःआ।

इपिल - रानुओड़अःदो चनअः चनअः को इदि होबाओःआ?

गंगी - अमअः अब्बा दो, गिति तेअःको, बिलेतेअःको, उयुन तेअःको सोबेन नमोःआ। होरोनिःमेनते पटी को, बिलतेअःको, उयुन तेअः को दरकरोःआ। इसिन बसङ तेअःको।

इपिल - तोबे लिङ सम्पोड़ो कोःआ।

गंगी - हे मर। (इपिल सेनोः तनाए)

गंगी - (अएःअएःरेगी) रानुओड़अःरे उपुन मोड़े हजार खरचाओःआ। का'यो का खरचाओःआ। मोड़े चण्डुः लेका दिल्ली रे कमि लेरे दोए पेरेःया। (सेनोः तनाए)

(दनपल दपलोः तना)

मोड़अः उनुदुब्

(गंगी एस्करगे मेनअःइया)

गंगी - एला निःकु होसोड़ोआ चि चिलका? नाअःजकेद कको नेलोःआ?

(घड़िकदए हपेना) सोबेन को होसोड़िआ इपिल दो कागे। अञ कञ देंगाकिःरेदो इदु इपिलअः अपुतेदो? इपिल दोए हिजुःगिःआ। सिबिलो हिजुःरेअः दोए जगरा कदगेआ। रंदाय ओञ सेनाए मेनाकदा, रंदाय, बिरसी अद मंगरी सोबेन को सेन मेनेःआगिको जगरा कदिञं। मोड़े होड़ दो को होबाओः तना। मोड़े होड़ रे हिसी मोड़े हजार टका दोञ नमेःआ। मोंद होड़ रे मोड़े हजार तोबे दो। अको नला को नमे च काको नमे अञ गोनोङ दोञ नमेःआ। अरब् दिसुम ओड़ोः दुबइ कोरे अकरिञ तको रे दो जद्का टका नमोःआ मेनदो होड़ो कंञ इतुवना।

सिबिल - (बोलो तनलोः) चि गंगी, सोबेन को तेबअःलअः?

गंगी - काको तेबअःकना, अमगेम अयराकना।

सिबिल - का जाअःको हिजुः रे दो?

गंगी - इपिल दोए हिजुःगेआ।

सिबिल - ओड़ोः अपि होड़?

गंगी - इदु मंगरी, रंदाय, अद बिरसी तको दो को हिजुःअचि का।

सिबिल - अम दो को जगराकद् मेरे दो हिजुःलगतिञ।

गंगी - जगर दो को जगराकद्गेआ! मेनदो नाअः जकेद् काको नेलोःतना।

इपिल - (बोलो तनलोः) हे। अञ दोञ तेबअःजना।

गंगी - मंगरी, रंदाय अद् बिरसी तकोओको हिजुःतनगेआ।

रंदाय - हे! ले, तेबअ लअः! (बोलो तनाको)

गंगी - अतेना बिरसी दो नमिनङ मरङ बेगए इदिजदा?

बिरसी - का दो अड़ोः ओकोए लिजअः दोए ओमेआ?

गंगी - ओड़अ किसन दो कचि! ओमेआए!

मंगरी - अना दो अड़ोः इतुवन तन च अड़ोः?

गंगी - अञ एन हुलङ रेगेञ कजिलेद्पेआ मोटा-झोटा को का दरकारोःआ।

बिरसी - अञ दो तोबे कञ अयुमलअः।

गंगी - तुसिञेनतेअःको, उयुन तेअःको ओड़अःकिसनगे ओमेआ। नेरेदो कुपुलको उयुनतेआ का अउते को हिजुःतन रे दो बु बलयोःआ। बुसुः कोरेबु गितिःकोःआ। ओकोरेदो पुरअः कुपुलको हिजुःजनरेदो कुपुल को हिजुःआकन ओड़अःकिसन दो बेगर लिजअः किचरिए अङेना।

मंगरी - तोबे चिलकाबु सेनोःआ?

गंगी - नाअः बस गड़ी हिजुःआ एनाते रांचीबु तेबअःया, रांचीएते रामगढ़ बु सेना। रामगढ़एते सोजे रेलगाड़ीते दिल्लीबु तेबअःया।

सिबिल - दोला तोबे बस गड़ी रकब् तेबुआ।

बिरसी - बस गड़ी दो कोरेबु नमेआ?

मंगरी - ने भुरुंगी (कउढंग)[12] दो जेतनअःओ काए इतुवना।

सिबिल - हों एनका ककी कजी'या। निःदो ओड़अःएते सिदा-सिदाए उड़ुंगोःतना चनअःए मुण्डी'या?

मंगरी - तोबे दिल्लीरे दो चिलकाए कमीःआ?

गंगी - हम्बल बनोःआ। जा'ते उड़ुङबड़ा मेनते दो पोङकागे का नमोःआ अद् जा'ते सेनोःदो ओड़अः किसन कारे ओड़अःरेन जांए होड़ोए इदि बेड़ामेआ। अम एस्कारेम उड़ुंगजनरेदो दिल्लीरेम अद् गिड़ियोःआ। एतुकन दंगड़ा को नम केदमेरे दोम अंद् उतरोःआ।

बिरसी - एनाकोञ मुण्डी केद् रेदो काञ सेना होनङ।

गंगी - एनाको अलोम उड़ुःया। ओड़अःएतेगे अलोम उड़ुंगनेःआ।

मंगरी - ओड़अः रेदो चिमिन दिलङ हपेयाकनम तइयोःआ। जा'हुलङ दो उड़ुङोःगे होबाओःआ?

गंगी - ओड़अःएते उड़ुङकोःओएते कोसअःम सेनोःआ? अबुआ हतु टोला लेका गड़ाको, बगैचाको, चि सकेको बनोःआ। सोबेन सअः बोड़े-बोड़े ओड़अःको मेनअः। जांतअः सेनोः रे दो ओड़अःकिसनगे इदिमेआ।

बिरसी - पिड़ी सअःदो सेनगे होबाओः देरङ?

गंगी - कोरे पिड़ीम नमेआ?

बिरसी - गड़ा सअः?

गंगी - एनाको दो होका तम। पिड़ी सअः चि गड़ा सअः, दरकार बनोःआ। ओड़अःरेगे बइयाकना। पिड़ी दो बनोःआ, गड़ा

दो संगिन गेआ, अद् गड़ा रे ओकोरेम दुबा सोबेन सअः दो निदा सिंगी होड़ोको तइयोःआ। ओड़अःरेगे सोबेन लगतिङ तेअः को नमोःअ, ओड़अःरेगे दअःरेअःनल बइयाकना। नूए दअःचि उमेन नड़कन सोबेनअः, ओड़अःरेगे होबाओःआ तोबे दोलाबु सेनोःआ बस गड़ी रेअःबेड़ा होबाओ तना।

सिबिल - दोलाबु।

गंगी - इपिल जेताओ कम जगरेआ?

इपिल - अञ अयुमतना।

गंगी - दोलाबु तोबे। (सोबेन को अपन-अपन बैग गोःकेद् हतरकेद्, दुपिल केद को उड्डोःआ)

(दनपलअः दपलोः तना)

इपअः चिटिद्

मिदअः उनुदुब्

(तुरी चण्डुः तयोमते)

इपिल - (हम्बल होड़मोआ कना) चान जालरेञ पसेजना। हतुरे दो मुण्डा पहंड़ को दुब्आ। अञअः एयङ अब्बा तकिङ के डंडे किना। गंगी दइअःकजिरेञ सेसेन जना अद् तिसिञ दो ने दसा रे मेनाञा। गंगीअः कजि कञ मनातिञ जनरेदो अञगअः अब्बाए गोःएग् जनते होनङ। इदु गंगी अञ दो अञगअः ओड़अः किसन तअःरे अकरिञ कदीञ चि चिलका? तोबे देरङ दिमसि पोयसञ असीतनरे मेनजद् तइना मोड़े हजारञ ओमाकदा अउरी अदइयोः जकेद् इपय पोयसा कञ ओमामा। सेनोःतेअःओ भड़ा बारिए ओमाञअः।

सिबिल - (बोलो तनलोः) चनअःकोम उड़उ तना?

इपिल - चनअञ उड्डुउआ? अम दो दइ अम नेलजाअःञगेआ, अञअःचान दसा होबाओतना। महुरा कोञ जोमतअःचिंञ हका गोजेना चि रेल लाइन रेञ गितिःकोःआ चि कुंआ कोरेंग कुड़िल गोःएना मुण्डी गेञ अदजदा।

सिबिल - हों एनाको अलोमजगरेआ का बुगिना।

इपिल - चनअ का बुगिना? सोबेन दोञ नेल परोमजदा। बउञ इतुकाए मेनते ओते बन्दर चबाजना, अञगअः अब्बाए हसुजनरे सिम, मेरोम चि सुकरी, बैइद भगतको ओम जना; रानुओड़अ ले सेनोःजना दो गंगी दइअःजलारेञ पसेजना।

सिबिल - हों अलोम हुड़िञ जीना, सिञबोंगा मेनअःइया।

इपिल - कोरे सिञबोंगा मेनअःइया? बुगीको जोमन् तन चि किसड़ को मेनते सिञबोंगा, रेंगे को मेनते दो का।

सिबिल - एनका ककी कजि'या।

इपिल - चते कञ कजि'या। नमिन दिलङएञ कमि केना ओड़अःकिसन सेनोःतेअःभड़ा बारि ओमाअःञा।

सिबिल - कम कजियइआ ने दसारेम कुलजाअःञ खरचा ओमाञमें।

इपिल - कजियंइयञ चनअः? इनकिङ दो बरन कुलगिअकिञ मोनेकेटेःलअःचि ओड़अः तेलङ उड्डुङ गिड़ितअइया। कुड़ी तनिः उड्डुउ तइना चि अञअः होड़ोअ कमि तनअः।

सिबिल - दो ओकोएअः?

इपिल- ओड़अःकिसनअःबोकोते कोड़अःकमि तनअः। इनिःकोरे बइबड्डुइगुकुंकलनेलुद चि इंजीनियरिंग तना। ओड़अःकिसन दो कुलगिअकिङ नुकरी तना। ओड़अःएते होनकिङ इतुसई किन सेनोःजनते दो अञ एस्करञ तइयोःतइना। का! का! मेतइतन रेयो ममरङ काएःमनामिञतइना। जनव गुड़इसिब् एनकागे।

सिबिल- तोबे ओड़अः किसनअः कुड़ी कम उदुबअःइया?

इपिल - उदुब् लिःअञ मेनदो काएःमनातिञजना। छुट्टी पुरा जनचि एन दंगड़ा दोए सेनोःजना। उपुन चण्डुःहोबाओ तनचिञ नेलोःतना। कुड़ी तनिःअएगअःकिसन ए शक तइना। बरनकिङअः उड्डुःतइकेना चि लङ उदुर उड्डुङ तअःइया। अञ मेतकिङतना चि एटेःरेगिञ उदुबलेद् बिना दो काबिङ पतियर जना।

सिबिल - तोबे?

इपिल - ओड़अःकिसन ए मेन केदा- नाअः दो तकलीफ रे मेनअःइया, अएगअःसोंगे को सेनोःतनरे इनकुलोलङ कुलतइया। कारे दो पुलिस को नमलङा।

सिबिल - हे मर, अलोम उड्डुःआ।

इपिल - चनअःकञ उड्डुःआ? हतुरे मुण्डा, पहंड़ अद् पड़हा रजा को दुबा। टका पोयसा दो बनोः ओड़अःरे ओते पिड़ी को बन्दर चबाजना।

सिबिल - हड़मए नेलबुगिःआ।

इपिल - ओको हड़म?

सिबिल - नङकोःएते नेल तन हड़मगे देरङ।

इपिल - इदु?

सिबिल - इदु दो का, होरा नमोःगेआ। बोरसा दोःएमें इनिःरे। इनिः होराए उदुबबुगेआ। अलोम हुड़िञ जी'ना।

रंदाय - (बोलो तनलोः) अम दो ना पोकतोगेम नमाना का?

सिबिल- चनअःरसिका जाअःमा? अबु कुड़ी होनकोअःजिनिद गे नेका मेनअः।

रंदाय - अमगा तेञाञ दो? (इपिल तिरुब् हपे तद्अए)

सिबिल - अम दो रसिका उड्डुङ जाअःमा? अमजअःने दसा रेम टोःजनरेदो टो'रेअःहोनङ।

रंदाय - टोःजनरे होनङ? नाअःदो का देरङाञ टो':कना?

सिबिल - हों एना जगर को होकाएमे, कारेदो अम कले सोंगेमेःआ।

बिरसी - (बोलो तनलोः) एल इपिल दो?

मंगरी - (बोलो तनलोः) तुराकना ओड़ोःचनअः?

सिबिल - हों ना, इपिल नाअःदुकुतनाए, दुकु तन होड़ोलोःअरगअःए जगर का लगतिंञा। नाअःदोबु लंदाइ तना, गपाकोते अबुगे जअःएन दसारेबु टोःजनरेदो?

बिरसी - का कजि दड़ियोःआ एना होबा दड़ियोःआ। होनोबा दो ओकोए नेलाना?

गंगी - (बोलो लोः) दोला सेकड़ाबु सेनोःआ रेलगाड़ी रेअःसोमोय होबाओःतना।

सोबेनको - दोलाबु तोबे।

(सोबेनको सेनोःतना)

(दनपलअः दपलोः तना)

बिरअःउनुदुब

(इपिल तिरुब हपेयाकदाए)

इपिल - अञ दिल्ली का जाअःञ सेनजनरे होनङ। (हपेकोःअए) (घड़िकद्ते) ओड़ोःदो जेता होरागे का तइकेना। गंगी जअःपोयसा काएःओमकेद अद् अञगअःअब्बा रानुओड़अःकाएःइदि जनरे दो होनङ काएःबनचाओ जनते।

सिबिल - (बोलो तनलोः) इपिल मइ चनअःकोम उड़ुःतना?

इपिल - चनअःञ उड़ुःआ? अञ गोटा हतुरेञ उमिजना। हका गोःएन गे चि कुआं कोरे कुड़िल गोःएन गे मोने जअःआ।

सिबिल - एनाकोदो हिरगो गे अलोम उड़ुःआ।

इपिल - चते काञ उड़ुःआ? नाअःदो मुण्डा, पहांड़ अद् पड़हा रजा को सब् दुब लेःआ। गचा (जरिबना) लेःआको, ओड़अःरे दो जेताओःबनोः अञोगे समातिःञ हिजुःतना, गचा चनअःतेले पेरेगेआ?

सिबिल - ए मइ, एनाको अलोम उड़ुःआ अनि सोबेनए नेलेःआ।

मसी - (बोलो तनलोः) चनअःको मइ बिङ जगर तना?

सिबिल - ने दिल्ली रेःआ संदेश को लिंञ अगुतदा, गपा कोते दोको सब् दुब लेःआ।

मसी - हे। गोटा हतु डओ-डओकना। मुण्डा अद् पहांड़ दो किन रसिकातना चि जो जोआकना।

बिरसा - (बोलो तनलोः) जो जोआकना? हं गियुःबनोः? अम मइ

इपिल तिंगु केटेगेन में। मुंडा-पहांड़बु नेल दरोम किञा। नाअःजकेद चनअःकिङ बएआकदा? इमनङ जरिबना को पेरेःजना? बुधनी अद रिझा असम किन निर केनरे रुड़ाजनचि मगो बहना (दो-दो) हजार टका किङ पेरेःकेदा। जोम रपुद् केदा।

करमा - (बोलो तनलोः) नेयागे देरङ अबुआ सोलोट ए डुम्बुइ जदा? नेसकन काबु जोमा रिका किना कारे दो अबु इतुसई गोटलिरे इतुनरअःचान गोनोङ चि लनअःपअः।

दोन्दोः - (बोलो तनलोः) ठउकागेम कजिलअः, अबु निमनंग इतु जनेते हतु काबु बए रुड़ाएरे ओकोए बएअःबुआ?

रतन - (बोलो तनलोः) हे मइ, अम तिंगु केटेःगेनमे। अम तिंगुन जनरे जाएंओ ककी हिलाओ दड़िआ मेआ।

बिरसा - अञ इतुवना, ओड़अःरेको जगरलअः- इपिल अपुते हसु जनरे मुंडा, पहांड़, पड़हा रजा पोयसा नम ओकोए तअःकाएःसेनकेना?

सिबिल - तोबे देरङ गंगीए देंगा किआ अद् गंगीअ पोयसा पेरेःमेनते दिल्लीए सेनकेना?

करमा - एन दुनुबरे गंगीबु सब् दुबीया, कुड़ी होनको दिल्लीते इदी-इदी अकरिञ जाअःकोःआ।

मसी - अम तिंगु केटेःएन में। सेपड़ेद हपनुम को दो दुनुबरे काको सेनारिका कोःआ मेनदो अले सेना।

सिबिल - नमिनंग होड़ो देंगा मेनतेले तिंगुन तना अम अलोम हुड़िञ जीउना।

बिरसा - हे, ने दुनुबरे सोबेन हिजुःअबु। ओकोए कए हिजुःआ

इनिःबु जरिबनाइया। नअःबु हुंडिअकना, अबु तलारे मोयोद् दुनुब् गोमकेबु सलाकिःआ।

दोन्दोः - रतनअःनुतुमञ ओमजदा।

रतन - अञ दो अलोपे सलांञा, अले ओड़अगे लटपटाओकना।

मसी - हे एनादो एनकागेआ। अबु हड़म कोलोःओपोता रेबु हटिञोःआ।

सिबिल - तोबे ददाको बिरसाबु जोगाओ किःआ।

सोबेनको - हे, हे मजम कजिलअः।

बिरसा - ओल गोमके?

रतन - इनिःदो अम सलाजोममे। अमए देंगा दड़िया मे लेका।

बिरसा - तोबे मसी तइन का?

सोबेनको - हे सुपटम कजि तदा।

दोन्दोः - पुञजी गोमके दो ओकोए?

रतन - सिबिल बु जोगाओ किःआ।

सोबेनको - हे तोबे।

करमा - ने सुम्बिद् दो चनअःबु लुतुमेआ?

बिरसा - तयोमते मजा उड्डुःबए केयातेबु सलाया नाअःदो कमि सेसेनका मेनते गया मुण्डा सेपड़ेद हपनुम सुम्बिद् बु लुतुमकेअः।

सिबिल - गया मुण्डा दो ओकोए?

बिरसा - बिरसा मुण्डाअःजोमतिःतइकेना। ओको इमतङ पुण्डी सयोब्

विलकिगंसन इनिःसब मेनते सेनकेनरे किङ ओपोता जना अएगअःओड़अःहोड़ो तुकुते सोबोःकिःआ।

दोन्दोः - मुण्डा कोःआ गअतिरिञ[13] को नमिननङःम इतुवना?

बिरसा - हे हड़म कोएतेंञ अयुमाकदा तोबे बर चण्डुःकोरेबु दुबा।

रतन - बर चण्डुःका अपि चण्डुःरे सोबेन कोबु दुब दड़िआ।

बिरसा - तोबे न मइ इपिल अञ दुनुब् गोमकेञ कजियमतना अलोम लसुरेना, लतरेना, अमअःकजिरे पेड़ेःनमकेते अले पेड़ेःगोःआ।

इपिल - हे ददाको अञ करार जदा कञ लतरेना।

बिरसा - तोबे गपा कोतेबु नपमा। दोलाबु।

(दनपलअः दपलोः तना)

इपअः उनुदुब्

(नेते हेनते ते मुण्डा अद पहंड़ किङ हिजुःतना अद् जोपोवर तनलोःअकड़ा रेअःदिरि रेकिङ दुब्तना)

मुण्डा - जोअर!

पहंड़ - जोअर! इसु दिलङ तयोमते नेका दुनुब् होबाओःतना।

पड़हा रजा - (बोलो तनलोः) हेगे! मर जोअर!

मुण्डा-पहंड़ - जोअर।

पड़हा रजा- रीझा दो बंगइःजना, समधियान तिःजना।

(ओड़ोःबर-अपि होड़को तेबअःतना)

तेबअःकनको- मर जोअर।

सोबेनको - जोअर।

पहंड़ - हिजुःको हिजुःकतेन का एटेःगेआबु।

मुण्डा - हे। एटेःलगातिंञा।

पहंड़ - दुनुब रेअःपइति दोबु इतुवन गेआ।

पड़हा रजा - एन रेयोबु जगर तका।

पहंड़ - गंगी कुड़ी मोड़ेअ कुड़ी होनकोके दिल्ली कमि नलाए इदि लेद कोआ- बिरसी, रंदाय, सिबिल, इपिल अद मंगरी। कमि नला दो को सेन केना बुगी लअःको। सोबेन को टकाको पोटोम अगुवाकदा।

मुण्डा - दुनुब् रेअःजगर जगरोःका। चनअःको चिका केना मेनेअःदो का।

पहंड़- हे एनाकिञ जगर तना। दिल्लीएते इपिल कुड़ी पोटोम अगुवाकदा।

पड़हा रजा - फरचा-फरचि जगारेम।

पहंड़ - हे'ञ जगरजदा। इपिल कुड़ी हम्बल रोवा कोःएते हिजाकना।

मुण्डा - एना दो ओकोए मुण्डी तदा?

पहंड़ - हें'ञ जगरलेःआ। हतुरे ने कजि डओ-डओःतन चि मुण्डाअःओड़अःहोड़ोंञ कुललिआ चिअचि इनिःगे हतुरे बुड़िया डाकटर दो नवा जोनोम कोरे इनिःगेको रअःइया।

पड़हा रजा - तोबे दो नेरे रगोःका।

(एनलोःगे मुण्डा बुड़िया बोलोतना) नेःदेरङ कजिःलोःगे तेबअःलआ।

पहंड़ - मर गा रोंगो अम इपिलअःहाल-चालम उदुब् दड़िआ?

मुण्डा-बुड़िया - मजातेञ उदुब् दड़िआ। मर कुलिञपे चनअःपे कुली जअःञा?

पड़हा रजा- अमगे देरङ अञतअःरेम जगर लअःइपिल हम्बल रोवा कनाए मेनेःआ।

मुण्डा बुड़िया - हे।

पड़हा रजा - कारे दो अमले जरिबना मेःआ।

मुण्डा बुड़िया - चनअःरअःपे जरिबनाञा जनव एना कमिगेञ कमितना। नवा जोनोम कोञ नेल तना; नवा जोनोम तयोम कुड़ी होनअःइतकिद् चिपुद् जद्कोआ।

पहंड़ - जु तोबे अमगे सनिका अद् सुकवरो रअःअउ लिकिङ मे।

मुण्डा बुड़िया- हे तोबे। (सेनोःतनाए)

(एनलोःदो बिरसा, करमा, दोन्दोः, मसी तको तेबअःतना)

पहंड़ - सेपड़ेद को दो हइ का। नेरे इनकुअःदरकार बनोःअ।

बिरसा - अपेगे देरङ जनव दो कपे तइना। गपा कोते अलेआ बोःरे

उयुःजनरे दो चनअःले जगरेःआ?

पड़हा रजा - हे बाबु एना दो मजम जगरलअः। तइयोःकको अबुअःजगर को अयुमेका। गपा कोते अकोगे देरङ को दुबा, अबु दो जनव का देरङबु तइयोःआ?

मुण्डा - हे तोबे को तइयोःका। मर दुब् पे।

(मुण्डा बुड़िया, सनिका अद् सुकवरो तकिङ लोःए हिजुःतना)

पहंड़ - मर सनिका, अबिङ जगरेबिङ चि होनकुड़ी तबेनअः चनअःकाए ठउका केदा? (बरनकिन हपेया कना)

मुण्डा - निकिङ दो चनअःबु कुलिकिङा? निकिङाअःहोनकुड़ी इपिलए हिजुःका।

पहंड़ - जुआ दोन्दोःइपिल रअःउलिमे अद् दिल्ली सेनकेनको सोबेनको हिजुःका।

दोन्दोः - हे मर। (सेनोःतनाए)

पहंड़ - इपिल ओको सेपेड़ेद लोःए तइकेना इनिःदो बइयोःनिःचि का?

सनिका - अलिञ् जेताओः कलिञ् इतुवना।

मुण्डा - दिल्ली रे दो अबुअःहोड़ो चि मेनअःकोआ?

(दिल्ली सेनकेन सोबेन कुड़ी होनकोलोःदोन्दोःए हिजुःतना)

पहंड़ - मर न इपिल अबिङ तइकेन सेपेड़ेद् दो अबु होड़ो चि एटअःको? (जेताओःकए कजि रुवड़ेःआ)

मुण्डा - दिल्ली रे दो अबु होड़ो दो का एटअःकोगे देरङ।

पहंड़ - अयुम जदम हले सनिका।

सनिका - हे'ञ अयुमजदा।

मुण्डा - तोबे चनअःबेन मेनजदा?

पड़हा रजा - हतुरे दो अबिङअ फैसला सेसेना अञ दो पड़हा दुनुब रेञ जगरेःआ।

पहंड़ - तोबे नेया दो मरङ डिटा (गुनहा) तनअः, मोड़े हजार बेन डण्डेओःतना।

सनिका - अपेअःफैसला लिञ मनतिञ जदा।

इपिल - (तिंगु केटेःजनते) चनअःगा अब्बाम मनतिंञ जदा? उदुब लेका लेकोमेतो ओकोएअःलेकाते ने दसा रिञा?

पहंड़ - अलेले कुल लेद् मा चि अमम् सेनकेना। लाअः अलोम जगरे कारले थममेःआ।

इपिल - थमलिञपे तो! अपे जेल कञ कुल तदपेरे दो कजिगेञ होकाअः।

सुकवरो - हों न मइ, मपरंग कोलोः एनका ककोे जगरेःआ।

इपिल - चते कञ जगरेआ, कजिगे एनका उड्डुओतना। अञगअःअब्बा हसुजनरे देंगाञ असिकेना ओकोए ओकोए ओको देंगा लिःञा?

बिरसा - एना दो मइ ठउका गेम जगर लअः। गंगी कुड़ी दो काको सब् दुबुजअःइया। इनिःकुड़ी होन को दिल्ली इदि इदि अकरिञ जदकोःआ।

(गंगी निरए मोनेजदा)

सिबिल - (गंगी सबी तनलोः) हों अलोम निरा। अयुमलेम अले अमलोःसेनकेन को नमिन दिलङ रे नलाओ कले नम केदा रुवड़ तेअःभड़ा एस्कार।

करमा - जोजो टोलारेन रतनीओ गंगीगे इदि लिःआ अद् दिल्ली रे बंगअःइजना। (गंगी हिचड़ाओ तना)

रंदाय - (सबी' तनलोः) कले निरा रिकामा तिसिञ नेललेःआ कुड़ी होन अकरिञ रेःआ नला चिमनङ अम नमाकदा।

पहंड़ - नेआ तोबे गुनहा गंगी कुड़ीअ रे सकियोःतना। तोबे जरिबना चिमनङबु तोलेःआ?

मुण्डा - गेल हजारेते लतर दो चनअः?

सनिका - अञ मोयदञ कजिलेःआ? का गोनोङोआ जाअः?

मुण्डा - चते का गोनोङोःआ? कजि'मतो?

सनिका - अञ हसुजनरे गंगी जाअःकाए देंगा केद लेरे दो होनङः तिसिञ जीद कञ तइनते। एना तेबु क्षेमा कीरे दो चिलकावोअः?

पहंड़ - मर सोबेन कजि पे अपेःआ उडुःको चिलका?

सोबेन सेपड़ेद् हपनुम को- क्षेमा तइयाबु, मेनदो अयरते ओड़ोःनेलेका एतकान कमि हिरगो चिउलएओ अलोए दुनुवाड़एका।

पहंड़ - हे'म मेनजदा?

मुण्डा - हे जदम?

गंगी - हे जदञ। तिसिंङ अञ ने दुनुबरे सोबेन हतु हगा ओड़ोःपंच गुसिया कोःअ सनमङरे किरियाञ जोम केतेञ कजि रुड़ाजदा-ओड़ोःदो चिउलाओ नेलका कञ कमि'या।

(सनिकाअःकटा सुबारे उयुःजनते- अब्बागा क्षेमा तञबिङ)

सनिका - सोबेन को क्षेमा तद्मेरे अलिञो लिञ क्षेमा तद मेआ।

(दनपलअः दपलोः तना)

टुंडुः

शब्द-संदर्भ :

1. नेलुद - पढ़ना
2. दरअः - कक्षा
3. साएरनिः - शिक्षक
4. ओलजपअः - नोट्स
5. लपअः - प्रतियोगिता
6. इतुसुई - स्कूल
7. लनअःपअः - लाभ, फायदा
8. गोटलि - कॉलेज
9. भुरुंगी - भकलोल
10. पोरसोंद् - सफल
11. चिमि - सीमान/सीमा
12. कउढंग - मूर्ख, बेवकूफ
13. गअतिरिञ - इतिहास, नङगम

हिम्मतवाली इपिल

(मुण्डारी नाटक)

हिम्मतवाली इपिल

पहला अङ्क

प्रथम दृश्य

(मैट्रिकुलेशन का परिणाम निकला है। रतन अपने मित्रों से बातचीत कर रहा है)

करमा - ऐ जी रतन, तुम पढ़ता तो नहीं था, कैसे प्रथम श्रेणी में उतीर्ण हुआ?

दोन्दोः - (प्रवेश करते हुए) उत्तीर्ण कैसे नहीं होगा? कक्षा में चुप-चाप सुनता था जब भी शिक्षक प्रश्न करते थे शीघ्र जवाव देता था।

मसी - वह तो सही हे, परन्तु पहले तो कभी नहीं दीखता था।

बिरसा - हां तो, परन्तु कोई-कोई जन्मजात बुद्धि वाला होता है।

रतन - बस-बस, मैं बताता हूँ। मैं कक्षा में ध्यान पूर्वक सुनता था और घर में आकर दुहरा लिया करता था। तुम लोग मेरी नोट कॉपी भी देख सकते हो।

करमा - पता नहीं, प्रति दिन तो कहानी पढ़ते ही देखता था। कभी सरिता, कभी कदाम्बिनी तो कभी सेंड़ा सेतेञ, अखड़ा आदि आदि।

रतन - पढ़ता अवश्य था परन्तु अपना काम नहीं भूलता था।

दोन्दोः - अच्छा, उन बातों को छोड़ो। अब हम आगे करेंगे क्या?

मसी - मैं तो पोलिटेकनिक की बात सोच रहा हूँ। पता नहीं आगे पढ़ने से नौकरी मिलगी इसमें सन्देह है।

बिरसा - तुम्हारा कहना सही है। परन्तु मैं ने तो तय किया है कि मैं ग्रेजएशन करूंगा। फिर जे.पी.एस.सी की प्रतियोगिता में बैठूंगा।

दोन्दोः - मैं इण्टर करके घर वापस आऊंगा। मैं समाज की सेवा करूँगा, खेती गृहस्थी करूँगा।

करमा - मैं ने भी बी.ए., बी.एड करने की बात सोची हे। हो सके तो कॉलेज में व्याख्याता बनूंगा।

बिरसा - तुमजी रतन, क्या सोचा है? बोलते कुछ भी नहीं हो?

रतन - कहूंगा क्या? मेरे माता-पिता आगे की बात तो सोच ही नहीं सकते।

दोन्दोः - सोच क्या नहीं सकते? तुमको सोचना है। पढ़ना तो तुम्हें है न?

रतन - मैं सोचूँगा क्या

करमा - सोचोगे क्या? करना तो तुम्हीं को है न? माता-पिता तो सहयोग देंगे।

रतन - कहना तो सही है परन्तु उनका सहयोग न मिला तो?

बिरसा - सहयोग क्यों न देंगे?

रतन - किसी तरह उन्होंने तो मुझे मैट्रीकुलेशन कराया। आगे मुझे पता नहीं।

करमा - नहीं, किसी तरह तो तुम्हें आगे की पढ़ाई करनी ही चाहिए नहीं तो प्रथम श्रेणी का क्या लाभ?

रतन - छोटी बहन इपिल को तो पाँचवी कक्षा भी पूरा नहीं करा पाये।

दोन्दोः - उन बातों को सोचना छोड़ो, अपनी बात सोचो।

रतन - सोचूँगा क्या? मैं तो माता-पिता पर आश्रित हूँ।

बिरसा - उन बातों को छोड़ो। तुम हाँ पढ़ूँगा बोलो।

रतन - मैं पढ़ूँगा कैसे कहूँ। साधन ही नहीं है।

करमा - साधन नहीं है मत कहो। तुम दृढ़ संकल्प करो रास्ता स्वयं ही निकल आयोग।

रतन - रास्ता स्वयं कहाँ से निकल आयेगा?

दोन्दोः - निकल आयेगा, ऊपर नीली छतरीवाला हमें नहीं छोड़ेगा

रतन - कौन ?

दोन्दोः - अरे, परमात्मा। हम उसी को तो पूजा अर्चना करते हैं।

रतन - वह तो है ही।

दोन्दोः - फिर?

रतन - मैं तो घर की परिस्थिति देखकर कह रहा था। बड़ी कठिनाई से तो मैं मैट्रिक उतीर्ण हुआ।

बिरसा - तुम्हारा कहना सही है। परन्तु कॉलेज पढ़ना भी कठिन नहीं है। तुम अल्प खर्ची बनो, आरम्भ में खर्च है बाद में तो छात्रवृति मिलेगी ही। पूरे वर्ष भर में छः हजार रुपये।

दोन्दोः - इतनी रकम में तो तुम सरलता से काम चला लोगे।

करमा - कह दो, कॉजेज पढ़ने को तैयार हूँ।

रतन - मुझसे नहीं होगा।

दोन्दोः - नहीं होगा तो नहीं, परन्तु मुझसे होगा कहो। "सेरेञ" का गीत तुमने नहीं सुना?

गाता है - उत्थान हमारा होगा कैसे ?

सब - इच्छा हमारी नहीं है
उत्थान हमारा होगा कैसे?
1. संसार के लोग कल ही जागे
उनका कदम आगे है वे प्रगति
कर रहे हैं
उत्थान के मार्ग से
हम उठेंगे कब?
सरना के साल वृक्ष नये पल्लवों
से भर उठे हैं;
मैदान में कोयनार और महुआ
वृक्षों पर हरियाली आयी है।
प्रगति के रास्ते से हम कब उठेंगे?
उठेंगे चलेंगे प्रगति के मार्ग पर
हमारे मन में भी हरियाली आयेगी।
मार्ग प्रशस्त कर आगे बढ़ेंगे
प्रगति के मार्ग पर
तब हमारा उत्थान होगा ॥

बिरसा - बोलो, हम कब उठेंगे?

करमा - हमारा संकल्प दृढ़ है तो उठेंगे ही।

मसी - 'सेरेञ' का दूसरा गीत नहीं सुने हो?

सब गाते हैं - हमारी इच्छा है तो हमारी प्रगति होगी
यदि नहीं हे तो प्रगति नहीं होगी।
हरहराती आँधी तूफान चले
ठसाठस ओला पहार बरसे

चट्टान सी अडिग इच्छा है
तो आंधी तूफान, ओला पत्थर
हमारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता।
घड़ घिड़ाता हुआ बादल गरजे
जरजराता हुआ कड़कती हुई बिजली चमके
चट्टान-सी अडिग इच्छा है।
तो बादल का गर्जन बिजली की कड़क
'हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकती।
बड़े-बड़े पत्थर पहाड़ की बड़ी-बड़ी चट्टानें
नदी नाले पहाड़ी गह्वर
चट्टान सी अडिग इच्छा है
तो पत्थर चट्टाने टूटेंगी
नदी नाले - गह्वर भट्ठ जाएंगे। (गह्वर)॥

बिरसा - कहो तो - यदि हमारी इच्छा चट्टान की तरह है तो चट्टान ओर बड़े-बड़े पत्थर टूटेंगे। नदी-नाले और गह्वर भट्ठ कर समतल हो जाएँगे।

करमा - हां, आगे पढ़ूँगा बोला।

दोन्दोः - दृढ़ संकल्प करो।

रतन - अच्छा तो मैं देखूँगा।

(पटाक्षेप)

दूसरा दृश्य

(रतन को उसके मित्रों ने तो उत्साहित कर दिया परन्तु वह सोच में पड़ गया कि क्या करे)

रतन - मित्रों ने तो मुझे बढ़ावा दिया परन्तु मेरे माता-पिता पता नहीं सहमत होंगे अथवा नहीं। तमन्ना तो मेरा भी है कि मैं कॉलेज पढ़ूँ। परन्तु पता नहीं।

इपिल - (प्रवेश करती हुई) भैया मुंह मीठा कराइए।

रतन - क्यों?

इपिल - मैट्रिक पास होने की खुशी में।

सिबिल - (प्रवेश करती हुई) हां तो प्रथम श्रेणी में उतीर्ण हुए हैं।

रतन - किसने कहा?

सिविल - मेरे भैया मसी और बिरसा आदि आपस में बात कर रहे थे। भैया ने तो मुँह मीठा करा दिया।

रतन - अब तो मेरी बारी है न?

इपिल - हाँ तो।

रतन - (दस का एक नोट देते हुए) लो, तुम्ही लोग खरीद खाओ।

इपिल - (लेते हुए) दीजिए।(इपिल और सिबिल दस का नोट लेकर, आनन्द पूर्वक निकल गये।)

सनिका - (प्रवेश करते हुए) बाबू रतन, इपिल दोनों क्यो इतना आनन्दित हैं?

रतन - पिताजी, मैंने मैटि ्क प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। इस

बात को सुनकर मुंह मीठा कराने की जिद पर उत्तर गयीं तो मैं ने उन्हें दस रुपये मिठाई खाने को दे दिये।

सुकवरो - (प्रवेश करती हुई) तब तो बेटा बहुत खुशी की बात है। मसी की माँ ने मुझे बताया अन्यथा मैं तो लिख लोढ़ा पढ़ पत्थल, कला अक्षर भैंस बराबर, मैं क्या जानती ?

सनिका - हाँ, मुझे तो दोन्दोः के पिता कह रहे थे -आज शाम को मेरे यहाँ आ जाओ। मैं ने पूछा क्यों तो वह मुझे बताने लगा कि दोन्दोः मैट्रिक उतीर्ण हुआ है। इस खुशीयाली में हंड़ियाँ पीयेंगे कह रहा था।

सुकवरो- तब तो हमलोग भी खुशी मनाएंगे।

सनिका - हाँ तो, एक खस्सी है उसी को काटेंगे।

रतन - पिताजी, एक बात कहूँ?

सुकवरो - बोलो बेटा, आज तो खुशी का दिन है।

रतन - माँ, हम खस्सी नहीं काटेंगे।

सनिका - तब क्या? सुअर?

रतन - नहीं, सुअर भी नहीं।

सुकवरो - फिर, क्या?

रतन - पता नहीं, कहूँगा तो आप दोनों नाराज हो जाएंगे।

सनिका - नाराज नहीं होंगे बेटा। बोलो तो सही।

रतन - मेरी छोटी बहन को तो पाँचवी में ही छुड़वा दिये।

सुकवरो - बेटा, लड़कियाँ तो दूसरे घर का चूल्हा फूँकने जाती है। उन्हें हम पढ़ाएंगे? मुझे नहीं देखते हो मैं बिल्कुल अनपढ़

हूँ। तुम्हारे मामा सबको देखते नहीं हो एक अमीन हो गया, एक शिक्षक हैं और एक पियुन बन गया है।

रतन - मां, ये सब तो पुरानी बातें हैं अब तो लड़कियों को भी पढ़ाना चाहिए।

सनिका - तब तुम्हारी इच्छा क्या है?

रतन - मेरे विचार से न हम खस्सी काटेंगे न सुआर।

सुकवरो - फिर हम क्या करेंगे?

रतन - मुझे और मेरी बहन का आगे का रास्ता दिखाइए।

सुकवरो - आगे का रास्ता? मतलब!

रतन - हम दोनों आगे पढ़ेगे।

सनिका - बेटा, आगे पढ़ना आसान समझते हो?

रतन - तब हम खुशी नहीं मनायेंगे।

सनिका - पहले तुम समझ लो फिर बोलो।

रतन - मैं क्या समझूँगा।

सनिका - कॉलेज पढ़ना आसान है क्या? शहर में जाकर देखो तो, शहर में खर्च कितना है। बात समझते हो।

रतन - अच्छा तो खुशी मनाना बन्द करें। सुअर खस्सी में खर्च नहीं है। शहर में खर्च है। मैं कल गुजरात मजदूरी के लिए जा रहा हूँ। मैं पैसे भेजूंगा मेरी बहन को पढ़ाइएं

सुकवरो - नहीं बेटा, वैसा नहीं।

रतन - क्यों नहीं? मेरे सभी कत्र अपने-अपने विचार से आगे की पढ़ाई कर रहे हैं। कोई पोलिटेकनिक तो कोई कॉलेज,

कोई क्यां कोई द्वितीय श्रेणी तो कोई तृतीय श्रेणी में उतीर्ण हैं तब भी आगे की बात सोच रहे हैं। फिर मेरा प्रथम श्रेणी में उतीर्ण होने का क्या मतलब? क्या चुपचाप बैठा रहूँगा?

सुकवरो - बस-बस, वैसी बातें मत करो। खुशीयाली के अवसर पर ऐसा खट-पट अच्छा नहीं है। (सनिका की ओर देखते हुए) तुम भी बच्चों की बात नहीं समझते हो।

सनिका - मैं क्या नहीं समझता हूँ?

सुकवरो - क्या नहीं समझता हूँ? बच्चों को बनना नहीं जानते हो।

सनिका - हाँ, तुम्हीं केवल जानती हो।

रतन - आप दोनों झगड़ते रहें मैं घर छोड़कर जा रहा हूँ।

(जाने का उपक्रम करता है)

सुकवरो - (रोकते हुए) बस बेटा, मैं जाने ना दूँगी।

रतन - जाने कैसी न देंगी?

सनिका - (बात सम्भालते हुए) हां बेटा, मेरा ही शायद सोच गलत है। आज झगड़ेंगी नहीं। चलो आज खुशी मनावे। आगे देखा जाएगा जैसा भी बनें।

सुकवरो - तो खुशी मनाने के लिए व्यवस्था क्या कर रहे हो? आज तो किसी तरह बिता देंगे। तुम भी दोन्दोः का घर जाओगे। कल परसो रतन के मामा सबको बुला लेंगे।

सनिका - तुम्हारा कहना उचित है।

नेपथ्य से - रतन है?

रतन - कौन, दोन्दोः? आओ घर में हूँ।

दोन्दोः- (प्रवेश करते हुए) क्या बात चीत हो रही है?

सुकवरो - बात-चीत क्या करेंगे बेटा, तुमलोग उतीर्ण हुए इसी बात की चर्च हो रही है। तुम इधर कैसे आया?

दोन्दोः - मैं भी उसी बात को लेकर आया हूँ। मेरे पिताजी ने कहा कि तुम्हारे पिता सनिका को शीघ्र बुला लाओ और उस घर की माँ भी सभी को लेके आयेगी। शाम में हमलोग खुशी मनाएंगे।

सुकवरो - बाबू, सारा परिवार? नहीं केवल तुम्हारे पिता जाएंगे।

दोन्दोः - मेरे माता-पिता दोनों ने ही कहला भेजा है।

सनिका - अच्छा तो चलो।

(पटाक्षेप)

तीसरा दृश्य

(गाँव का मुण्डा अपने घर में रुपये गिन रहा है।)

मुण्डा- मैंने पांच खस्सी बेचे।

मुण्डा बुढ़िया - (प्रवेश करते हुए) क्या बड़बड़ा रहे हैं?

मुण्डा- ए जी, पाँच खस्सी मैंने बेचे वही रुपये गिन रहा हूँ।

बुढ़िया - हाँ अब तो महुंआँ डाँड़ चले जाइए। एक महीने में समाप्त हो जाएगा। फिर उसके बाद सुअर बेचिए।

मुण्डा - नहीं बुढ़िया, वैसी बात नहीं है। नहीं पता है, रेगो पीते-पीते मरा?

बुढ़िया - नहीं तो आप भी वैसा ही करें।

मुण्डा - बेटा मसी मैट्रिक उतीर्ण हुआ है, वह आगे पढ़ लेते। सिविल भी उच्च विद्यालय में है। कल वह भी मैट्रिक उतीर्ण होगी। पैसे की तो जरूरत होगी ही

बुढ़िया - एक-एक करके बेचते तो अच्छा होता। उतने खस्सियों के पैसे कम हैं?

मुण्डा - कम क्या होगा? पैंतालीस हजार।

बुढ़िया - हाँ तो? कहीं चोरों का पता लगा तो? यदि उन्होंने सेंध मार ली तो?

मुण्डा - बैंक में जमा कर देंगे?

बुढ़िया - कौन सा बैंक में।

मुण्डा - स्टेट बैंक में।

बुढ़िया - कहीं खो गया तो?

मुण्डा- बेवकूफ औरत, कैसी बुढ़िया हो? बैंक में पैसा खोता है? चोर-डाकुओं से बचने के लिए उसी में सोना रखा जाता है। सोना समझ रही हो न? पहान अपना सोना बैंक में ही रखा है।

बुढ़िया - ओ हो, इसीलिए मैं आश्चर्य करती हूँ कि पहान के पास सोना है ऐसा लोग कहते हैं तब भी उसके घर चोर डाकू नहीं जाते हैं।

मुण्डा - तुम भी इस उम्मीद में हो कि चोर-डाकू जाएँगे तो मुझे भी लाभ होगा?

सनिका - (नेपथ्य स) हैं कि नहीं?

मुण्डा - लो जी, जल्दी से वक्स में डाल दो।

सनिका - (नेपथ्य से) हैं कि नहीं?

मुण्डा - हैं भाई आइए पधारिए।

सनिका - (प्रवेश करते हुए) जोहार!

मुण्डा - जोहार। तब किधर आये?

सनिका - आऊँगा किधर? बेटा रतन मैट्रिक उतीर्ण हुआ है।

मुण्डा - हाँ, वह तो बेटा मसी के मुँह से सुन चुका हूँ कि प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ। मैं बेटे को डाँटने लगा - तुम तो भेड़ी छान्दता था तुमको भी तो मैंने पढ़ने ही भेजा था तुम थर्ड डिवीजन से निकले हो। तुम स्कूल में क्या करता था?

सनिका - अपनी-अपनी ही बुद्धि।

मुण्डा - क्या अपनी-अपनी बुद्धि? जिसके घर में है नहीं वे प्रथम

श्रेणी और चलता पुर्जा घर तृतीय श्रेणी?

सनिका - ठीक है, निकला तो सही? नहीं पास होता तब न?

मुण्डा - खैर निकल तो गया। अच्छा इन बातों को छोड़िए। कहिए किधर आये हैं?

सनिका - आऊँगा किधर? रतन आगे पढ़ना चाहता है।

मुण्डा - तब क्या? आगे पढ़े।

सनिका - आगे तो पढ़े सही, परन्तु हम दोनों कैसे भेजेंगे?

मुण्डा - कैसे भेजेंगे? मैं समझा नहीं?

सनिका - हम दोनों के पास तो पैसे नहीं है इसीलिए बेटी इपिल को भी स्कूल छुड़वा दिये। रतन के सभी मित्र आगे की पढ़ाई करने को तैयार है! आप कॉलेज नहीं भेजेंगे, तो मैं मजदूरी के लिए गुजरात चला जाऊँगा। ऐसा कह रहा है।

बुढ़िया - (प्रवेश करती हुई) वह तो ठीक ही कह रहा है। हाँ, जोहार।

सनिका - जोहार। ठीक तो ठीक ही कह रहा है, परनतु हम दोनों तो गरीब आदमी, कैसे क्या करेंगे समझ में नहीं आ रहा है।

मुण्डा - मानता हूँ आपके पास पैसा नहीं है, जमीन जयदाद तो है? कहते हैं- है तो खर्च खर्च करके घर उजाड़ दो; नहीं है तो दया की भीख माँगो। हम दोनों तो गरीब आदमी कहते हैं और कल परसों हमने उत्सव मनाया था वह भी आपने खस्सी कटा था। आवश्यकता क्या थी? उत्सव न मना कर खस्सी को ही बिक्री कर देते?

सनिका - आपका कहना सच है परन्तु आनन्द की अधिकता से सोच न सके।

बुढ़िया - तब आपने सोचना क्या है?

सनिका - हम सोचेंगे क्या? हम जमीन ही बन्धिक में देना चाहते हैं। इसी उद्देश्य से तो मैं यहां आया हूँ।

मुण्डा - तब कौन सी जमीन?

सनिका - हमलोग दस हजार में बन्धिक करना चाहते हैं।

बुढ़िया - कितने वर्षों के लिए?

सनिका - तीन वर्ष के लिए।

मुण्डा - अरे वह तो पथरीली जमीन है कुछ भी नहीं उपजता है।

सनिका - अच्छा तो नीम चवरा।

मुण्डा - वह भी तो वैसा ही है। तीन वर्ष में तो हजार, रुपये का सूद भी नहीं निकलेगा।

सनिका - वैसा मत बोलिए।

बुढ़िया - नहीं तो, बन्धिक तो आप ही कर रहे हैं न? किसी के पास जाइए ऐसा ही लोग कहेंगे। आँख बंद करके तो लोग सहमत नहीं होंगे?

मुण्डा - ऐसा कीजिए सोले गढ़ा हम लोगों को दे दीजिए।

सनिका - वह तो भाई, हमारे पूरे परिवार का भरण पोषण करता। वह मैं दे नहीं सकता।

बुढ़िया - तब तो अन्य लोगों के पास ही जाइए।(सनिका सोच में पड़ जाता है)

सनिका - (स्वगत) अन्य तो और किसके पास जाऊँगा पहान तो हाँ नहीं करेगा। मुण्डा तो कल ही पाँच खस्सी बिक्री किया है।

मुण्डा - सोच क्या रहे हैं?

सनिका - सोचूँगा क्या? अन्य और किसके पास जाऊँगा?

बुढ़िया - आप बात मानिए- सोले गढ़ा नहीं तो दलदल खेत हमें दीजिए।

सनिका - (स्वगत) गुजारा नहीं चलेगा तो मैं मजदूरी के लिए नहीं निकल जाऊँगा?

मुण्डा - क्या कहते हैं?

सनिका - हाँ तो सोले गढ़ा ही परन्तु पन्द्रह हजार में।

मुण्डा - उतना तो हम दे नहीं पायेंगे।

सनिका - अच्छा तो तेरह हजार।

मुण्डा - (स्वगत) इतने में तो शायद घाटा नहीं होगा। जलकी खेत है। पैसा भी सुरक्षित रहेगा और सूद के रूप में ऊपज भी अधिक मिलेगी। (प्रकट में) हाँ तो जाइए लिखा पढ़ी के लिए किसी को ले आइए।

सनिका - किसको लाऊँगा।

मुण्डा - बुद्धराम को बोलिए न। वह तो कोर्ट-कचहरी आता जाता है।

सनिका - अच्छा तो बुलाकर लाता हूँ। (जाता है)

(पटाक्षेप)

दूसरा अङ्क

प्रथम दृश्य

(सनिका अस्वस्थ पड़ा हुआ कराह रहा है)

सनिका - हाय। ओ-हो-हो-हो-मैं कैसी बीमारी से पीड़ित हूँ? पता नहीं। (पुकारते हुए) इपिल, दो बेटी मुझे पानी पिलाओ।

इपिल - (नेपथ्य से) क्या बोले पिताजी?

सनिका - पानी लेके आओ बेटी पीयूँगा।

इपिल - (एक गिलास में पानी लेकर आती है) पिता जी उठिए तो, सहारा देती हुई उठाती है और पानी पिलाती है) लीजिए पानी पीजिए तो।

सनिका - (पानी पीने के बाद) अब सुला दो। (इपिल धीरे से सुलाती है) तुम्हारी मां अबतक नहीं आयी है?

इपिल - अब तो आ रहे होंगे।

सुकवरो - (नेपथ्य से) हमलोग आ गये। (प्रवेश करती हुई) बेटी मचिया लेके आओ।

(इपिल घर के भीतर मचिया लेने जाती है)

पटा भगत - (प्रवेश करते हुए) घर तो सड़ी मच्छली सा महक रहा है।

सुकवरो - क्या? सड़ी मच्छली-सा?

पटा भगत - हाँ यह तो नगे एरा (जल आत्माओं) लोगों का काम जैसा लगा रहा है।

(इपिल मचिया लेकर आती है और देती है)

इपिल - जोहार।

पटा भगत- जोहार! कितने दिनो से अस्वस्थ्य हैं?

सुकवरो - एक महीना हो गया।

पटा भगत - और आप लोग चुप हैं?

सुकवरो - चुप तो क्या रहेंगे। वैद्य ला रहे हैं दवा-दारू दे रहे हैं। परन्तु कोई लाभ नहीं।

पटा भगत - एक सूप दीजिए तो और साथ में लोढ़ा पत्थर तथा मुट्ठी भर धान।

(इपिल सूप, लोढ़ा और धान लेकर आती है)

पटा भगत - तीन साल पत्ता और तीन सींक।

इपिल - साल पत्ता और सींक?

पटा भगत - हाँ बेटी, साल पत्ता और सींक। यदि है तो हरा पत्ता अन्यथा सूखा भी चलेगा। और सींक तो बाँस का।

इपिल - पत्ता तो सूखा ही मिलेगा।

सुकवरो - कल परसों बाजार से लायी हूँ बेटी। बण्डल खोल के देखो तो सूखा नहीं है।

(इपिल भीतर से निकलकर लाती है)

पटा भगत - एक खपरे में आग और थोड़ा सा हल्दी का चूर्ण। (इपिल आँगन से खपरा लेकर आती है तब तक भगत सींक को अंगुलियों से चार अंगूल नाप कर तोड़ता है।)

इपिल - आग तो बुझ गई होगी।

सुकवरो - बुझी नहीं है बेटी, मैं ने राख से ढँक दिया था। बुझा होगा

तो लकड़ी जलाकर आग बनालो। (इपिल भीतर जाती है और आग तथा हल्दी का चूर्ण ले करके आती है)

(पटाभगत लोढ़ा पत्थल से सूप में धान को रगड़ता है और धान का भूसा फूँक कर हटाता है। फिर खपरे की आग में हल्दी चूर्ण डालता है और मंत्रोच्चारण करता है)

"बान्धूंगा मैं, ले जाऊंगा मैं,

पहुँचाऊंगा मैं, शव पर्वत पर।

ठेलूगां मैं, डालूंगा मैं

गाडूंगा मैं, शव पर्वत पर ॥"

(एक साँस से तीन बार सनिका की ओर फूंकता है इसी तरह तीन बार मंत्रोच्चार करता है)

पटा भगत - ये तो सोले गढ़ा के नगे देवी ही है। वे ही इसे परेशान कर रहे हैं।

सुकवरो - सोले गढ़ा की नगे एरा आत्माएँ?

पटा भगत - हाँ, उस खेत में दल-दल है न

सुकवरो - हाँ है।

पटा भगत - वे ही नाराज हैं। कोई कुछ कह दिया होगा।

सनिका - हाय! ओ हो हो हो हो। कौन किसने गाली दी?

सुकवरो - बस-बस मत करो थक जाओंगे।

पटा भगत - आपमें से किसी ने कुछ कहा होगा। इसी से नाराज है और वे सीधे-सीधे तो नहीं कर पा रही हैं अतः दूसरे को उकसा रही हैं।

सुकवरो - कौन क्या बोलेगा? बेटा रतन कहने लगा कि आगे की पढ़ाई करूँगा तो हमने मुण्डा के यहां उस जमनी को बन्धि ाक रख दिये तीन वर्षों के लिए। यही तो इस वर्ष पूरा हो जाएगा।

पटा भगत - बस-बस, इसी कारण उनकी पूजा नहीं हो रही है। फसल बोते समय और काटते समय आाप दोनों तो काली मुर्गी की बलि देते थे। मुण्डा को तो गर्ज क्या है जो ऐसा करेगा? बो रहा है, काट रहा है।

सुकवरो - तब.....करना क्या चाहिए।

पटा भगत - उन्हें मनाना बुझाना होगा।

इपिल - कैसे उन्हें मनाएंगे?

पटा भगत - वे तो काली मुर्गी की बलि ही चाहेंगी?

सुकवरो - इतने मे ही बीमारी दूर हो जाएगी?

पटा भगत - कहाँ दूर होगा? मैंने पहले ही बताया था कि नगे देवियाँ सीधा तो हिम्मत नहीं कर रही हैं अतः दूसरों को उकसा रही है।

इपिल - दूसरों को उकसा रही हैं, मतलब?

पटा भगत - हाँ बेटी, उनकी मित्रता है ददुर घाट के देव से।

इपिल - ददु घाट के देव से? मैं तो वहीं नहाने-धोने और कपड़ा फिचने जाती हूँ मुझे तो पकड़ता नहीं है?

पटा भगत - तुमने उसको बिगाड़ा क्या है? और तुम्हें पकड़ेगा? यदि तुम उसकी मनौती कर रही हो, और तुमने मनैती छोड़ दी तभी नाराज हेगा, संयोग से एक एक बार खेलने के इरादे से किसी को पकड़ता है।

सुकवरो - फिर हम क्या करें?

पटाभगत - बस, कहने तो दीजिए मैंने बात कहाँ पूरी की है? बात ऐसी है कि ददुर घाट के देव की मनौती तो पहान करता है। और आप लोग पहान के अधीन हैं। आवश्यता पड़ने पर पहान से लेन देन होता ही है।

सुकवरो - लेन-देन तो है ही।

पटा भगत - इसीलिए ददुर घाट का देव स्वयं नहीं कर पा रहा पर नगे देवियों को भी इनकार नहीं कर पा रहा है अतः आप मित्र थोलकोबेड़ा के दरहा देव को उकसा दिया है। वही आप लोगों को परेशान किया हुआ है।

सुकवरो - ओहो, ऐसी बात है? इसीकारण दवा-दारू कि मुर्गी सुअर बलि प्रभावहीन हो रहा है। न तो वैद्य सफल हो रहे न भगत।

इपिल - उस देव को कैसे मनाना होगा?

पटा भगत - वह तो दरहा देव है, सरलता से नहीं मानेगा।

सुकवरो - फिर भी?

पटा भगत - जब तक कसेया बकरा की बलि नहीं देंगे तब तक मानेगा नहीं।

सुकवरो - उधार-पैंचा से तो हम लदे हुए हैं और ऊपर से काली मुर्गी तथा कसेया बकरा? खैर, काली मुर्गी तो किसी तरह इन्तजाम हो जाएगा। परन्तु कसेया बकरा?

पटा भगत - मेरा जो फर्ज था मैंने बता दिया जब आप दोनों समझे आप लोग मरीज को देखिएगा अथवा यह तो आप दोनों का विचार है।

सुकवरो - इलाज तो करना ही है परन्तु कसेया बकरा वाली बात में हम किंकर्त्तव्य विमुढ़ हैं।

पटा भगत - अच्छा जो बताना था मैं ने बता दिया आब आप दोनों समझे (खपरा पकड़कर उसमें हल्दी चूर्ण डालता है ओर सनिका की ओर धुँआ फूँकता है।) अच्छा अब इसके सीमा से बाहर चौराहे पर छोड़ आता हूँ। (चावल भी साल पत्ता में लपेटकर जे जाता है)

(पटाक्षेप)

दूसरा दृश्य

(इपिल और सुकवरो माँ-बेटी बातचीज कर रही हैं)

इपिल - ओ मां।

सुकवरो - हाँ बेटी।

इपिल - मेरे पिताजी के लिए तो हम दोनों क्या करेंगे?

सुकवरो - बेटी दिशा ही नहीं सूझ रहा है। तुम्हारा दादा तो दादा, कहाँ राँची में बहू ढूंढ़ लिया। भले ही सास-ससुर मिले। अब तो चिट्ठी-पत्र तक नहीं भेजता है।

इपिल - हाँ तो, उसके मित्र बिरसा आदि के मुंह से मैंने सुना है- रतन तो धनी घर की बहू पाया हैं हमारी ओर क्या देखेगा?

सुकवरो - यदि मैं ऐसा जानती तो कभी भी कॉलेज नहीं भेजती। उसके लिए खेत टाँड़ बन्धिक में दे दिये। अब तो कसेया बकरा हम दोनों कहां से पायेंगे?

इपिल - उसमें भी तो खर्च है। पिताजी को हम अस्पताल ले जाएँगे तो? अस्वस्थ्य लोग अस्पताल से स्वस्थ्य होकर लौटते हैं। कसेया बकरा बलि देने से तो पता नहीं।

सुकवरो - बेटी, हम अस्पताल कैसे ले जाएंगे? पैसे नहीं हैं। खेत टाँड़ तो हमने बन्धिक में दे दिये बिना खेत टाँड़ दिया दिखाये पैसे किससे मिलेंगे?

इपिल - मां कुछ तो करना ही होगा। मुण्डा को हमने खेत टाँड़ दिया है। उसके पास जाकर आती हूँ। बन्धिक का समय

ही न एक वर्ष आगे बढ़ेगा। वह नहीं तो पहन के पास जाऊँगी।

सुकवरो - पता नहीं बेटी, मुण्डा तो नहीं स्वीकार करेगा। पहान तो और ही स्वीकार नहीं करेगा। वह तो जाति का कंजूस है। खाने-पीने बुलाओ शीघ्र आयेगा। पैसे की बात करो तो इनकार में सिर हिला देगा। सड़ा हुआ खाना तक लोग नहीं फेंकते हैं, वैसे धनी हैं।

इपिल - फिर भी मैं जा करके आती हूँ।

सुकवरो - तुम्हारी मर्जी। तुम्हारे पिताजी को देखकर आती हूँ कहीं प्यास तो नहीं लगी है।

गंगी - (नेपथ्य से) इपिल घर में हो क्या

इपिल - कौन? गंगी दीदी।

गंगी - (प्रवेश करती हुई) हां मंइया।

इपिल - आइए। बैठने के लिए मचिया देती है।)

गंगी - मैंने सुना है कि तुम्हारा पिता बीमार है।

इपिल - हां दीदी, एक महीने से ऊपर हो गये। स्वस्थ्य ही नहीं हो पा रहे हैं। पता नहीं बीमारी क्या है?

गंगी - वैद्य और भगत सबको नहीं दिखायी?

इपिल - दिखा रहे हैं, क्यों नहीं। वैद्यों को पकड़े, भगत सबको पकड़े , लोग जो कह रहे हैं वही कर रहे हैं। मुर्गी तो मुर्गी बलि दे रहें, बकरा तो बकरा, सुअर तो सुअर, न तो बलि सफल हो रहा है और न दवा-दारू ही।

गंगी - अम्बाडीह के पटा भगत को नहीं बुलायी?

इपिल - दीदी, बोलिएगा क्या? उसे भी हमने बुलाया। कल ही तो आया था।

गंगी - वह क्या बोला ?

इपिल - बोलेगा क्या? सोलेगड़ा की नगे देवियों का प्रकोप है कहा।

गंगी - बहन नगे देवियाँ ठीक नहीं हैं। तब भी वे सरलता से मान जाती हैं।

इपिल - सरलता से कहाँ मानती हैं?

गंगी - मान जाती हैं। काली मुर्गी की बलि दे दी, बस मान गयीं। मेरे बड़े भाई बीमार थे तो हमने काली मुर्गी की बलि दी और वह स्वस्थ्य हो गया।

इपिल - मानती होंगी पर मैं क्या बताऊँ? सोले गढ़ा तो मुण्डा के पास बन्धिक होने के बाद से हमने उनकी मनौती छोड़ दी। फसल बोने-काटने में उनकी मनौती नहीं होने लगी।

गंगी - ओ हो, इसीलिए तुमलोग असफल हो।

इपिल - उनकी मनौती बन्द है इसलिए वे नाराज हैं।

गंगी - तब पटा भगत ने क्या कहा?

इपिल - नगे देवियाँ स्वयं तो सीधा आक्रमण नहीं कर पा रही हैं इसलिए ददुर घाट के देव को उन्होंने उकसाया।

गंगी - ददुर घाट के देव की मनौती तो पहान करता है।

इपिल - सच है कि पहान उसकी मनौती करता है और हमलोग पहान के अधीन हैं। अपने को निर्दोष प्रमाणित करने और नगे देवियों की मित्रता भी निभाने के लिए अपने मित्र थोलकोबेड़ा का देव को उकसाया है।

गंगी - अच्छा, तो इसीलिए देर हो रही है।

इपिल - वह भी कसेया बकरा माँग रहा है।

गंगी - तब तो कसेया बकरा दे दो। कोई बड़ी बात नहीं है।

इपिल - बड़ी बात तो नहीं है परन्तु हमलोगों के लिए बड़ी बात है। हम कहाँ से देंगे? सोले गढ़ा, नीम चौरा, कुसुम टाँड़ सब तो बन्धिक हो गया। दलदल खेत से किसी प्रकार गुजारा कर रहे हैं। बैद्य और भगतों को मुर्गा-मुर्गी, खस्सी, सुअर देकर खाली हो चुके हैं। अब कसेया बकरा का इंतजाम कहाँ से होगा?

गंगी - अच्छा मइंया, एक उपाय है।

इपिल - क्या?

गंगी - तुम तो जानती हो मैं दिल्ली में काम करती हूँ।

इपिल - वह तो मैंने सुना है।

गंगी - बहुत बड़े मकान में रहती हूँ। दो बच्चों को देखती हूँ, घर का काम देखती हूँ। खाना बनाने का काम तो मालकिन ही करती है।

इपिल - और वेतन कितना देते हैं?

गंगी - काम तो बहुत अधिक नहीं पड़ता है दोनों बच्चों को देखती हूँ। दोनों छोटे हैं। मेरे मालिक और मालकिन चार व्यक्ति है। दो हजार मासिक देते हैं।

इपिल - खाना-पीना?

गंगी - सब उन्हीं का यहां तक कि ओढ़ना पहनना भी।

इपिल - तब तो दीदी बहुत ही सुखी हैं।

गंगी - बात सही है। बहुत ही सुख में हूँ। कहीं जाते हैं मुझे भी साथ ही ले जाते हैं। उन्हीं की कृपा से जयपुर, गोवा और हिमालय देख आयी हूँ।

इपिल - तब तो दीदी बहुत ही मजे में हैं। मैंने हिमालय पहाड़ का नमा ही सुना भर है। कहते हैं बहुत बड़ा है। हमलोगों का बिरता पहाड़ जैसा?

गंगी - कहां हिमालय पहाड़ और कहां बिरता पहाड़? हिमालय पहाड़ में कितने बिरता पहाड़ समा जाएंगे। ऊपर देखने से सिर की टोपी गिर जाएगी पर चोटी दिखाई नहीं देगी और दहिना बायाँ देखने से लम्बाई की सीमा नहीं।

इपिल - तब तो बहुत बड़ा है न?

गंगी - बहुत बड़ा है सब ओर बर्फ ही बर्फ है। सूरज की किरणें पड़ती है तो उस दृश्य की सुन्दरता वर्णन से बाहर है।

इपिल - बर्फ है तो जाड़ा भी है?

गंगी - है क्यों नही? हम जो पहने हैं, उन कपड़ों से वहां गुजारा नहीं। ऊनी वस्त्र, कम्बल रजाई आदि की आवश्यकता पड़ती है तो मैं बताऊँगी क्या?

सुकवरो - (नेपथ्य से) आ जाओ बेटी, गप कितना करोगी? अंधेरा हो रहा है, शीघ्र पानी ले के आओ।

गंगी - अच्छा तो फिर, कभी बात करेंगे।

इपिल - हां, मुझे भी पैसों की खोज में मुण्डा पहान आदि के पास जाना था, अब तो कल ही जाऊँगी, पानी लेके आती हूँ।

(दोनों का प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

तीसरा दृश्य

(सनिका कराह रहा है घर में कोई नहीं है।)

सनिका - हाय ऽऽऽ! हाय ऽऽऽ! हाय ऽऽऽ! कौन- सा भूत पकड़ा है? दवा दारू नहीं काम कर रहा है। मुर्गी सुअर अथवा बकरा की बलि से भी नहीं बन रहा है।

इपिल - (प्रवेश करती हुए) पिताजी हल्दी चूर्ण का हवन कि मान-मनौती हम त्यागें।

सनिका - हाय ऽऽऽ ! फिर हम क्या करें? सिञबोंगा की मनौती छोड़ कर, हम ईसाई हो जाएँ? हाय ऽऽऽ !

इपिल - नहीं पिताजी सिंञबोंगा को हम नहीं छोडंगे।

सनिका - फिर?

इपिल - इन देवी-देवताओं को मनौती छोड़कर हम अस्पताल चलते हैं।

सनिका - बेटी, तुमलोग कुछ भी करो, मुझे बीमारी से मुक्ति तो मिले? न तो मैं मर ही रहा हूँ और न ढंग से जी रहा हूँ। केवल मैं परेशान हूँ।

इपिल - किसी तरह सहन करें पिताजी। आपको अस्पताल ही ले जाएँगे।

सुकवरो - (प्रवेश करती हुई) कैसे ले जाएँगे बेटी?

इपिल - मैं व्यवस्था करूंगी।

सुकवरो - क्या व्यवस्था करोगी बताओ तो?

इपिल - मैं मुंडा से मिलके आती हूँ।

सुकवरो - जाओ परन्तु आशा नहीं है।

इपिल - उससे काम नहीं बनेगा तो पहान से मिलूँगी।

सुकवरो - वह तो बेटी ओर ही नहीं कहेगा।

इपिल - ऐसा क्यो?

सुकवरो - वह तो महा कंजूस धनी व्यक्ति हैं जब से फौजदारी में जीता है तब से और अधिक कंजूस हो गया है।

इपिल - फौजदारी का कारण?

सुकवरो - पहान के नाम से डाली कतारी खेत है।

इपिल- डली कतारी क्या है?

सुकवरो- पहान पूजा-पाठ करता है। गाँव को बाहरी प्रभाव या भूत प्रेतों से बचाता है। गाँव के लोगों को अदृश्य आत्माओं के आक्रमण से बचाने के एिल पूाज पाठ कराता है। इसी उद्देश्य से उसको कुछ खेत मिलता जो डली कतारी कहलाता है।

इपिल - फिर हमें थोलको बेडा का दरहा देव क्यों परेशान कर रहा है?

सुकवरो - वह बेटी हमलोगों की नासमझ से।

इपिल - हमलोगों की नसमझ मतलब?

सुकवरो - सोले गढ़ा को हमें बंधिक में नहीं देना चाहिए था। बन्धिक भी कर दिये तो हमने नगे देवियों की मनौती के लिए हल्दी चूर्ण तक का हवन नहीं किया। याद है तुम्हारे पिता जी दलदल खेत के ऊपर और सोले गढ़ा के ऊपर केतकी झाड़ी के पास पूजा-अर्चना करता था?

इपिल - हाँ, वह तो आज मुझे पता लगा।

सुकवरो- बुनना, रोपना अथवा फसल काटने समय पहान पहले पूजा-अर्चना कर लेता है, और नहीं तो जो तेयार रहता है - बोने-रोपने के लिए अथवा फसल तैयार है और काटना है तो वही पूजा पाठ के लिए पहान को मुर्गी देता है। उसकी पूजा के बाद ही वह अपना काम करता है।

इपिल - यह तो मैंने कभी न देखा न सुना।

सुकवरो - ददुर घाट में पहान ही पूजा पाठ करता है इसी लिए वहाँ का देव हमें परेशान नहीं करता है। हम वहां कपड़ा धोते या नहाके देखों वहां का देव तुरन्त हमलाकर बैठता।

सनिका - हाय ऽऽऽ! हाय ऽऽऽ! हाय ऽऽऽ! तुमलोग बात बना रही कुछ तो करो।

सुकवरो - उपाय की तो बात विचार हो रहा है।

इपिल - तब माँ मैं गाँव के मुंडा से मिल लेती हूँ। वहां काम न बनेगा तो; गाँव के पहान के पास जाऊंगी, वहां भी काम नहीं बनेगा तो मैं पड़हा राजा से बात करूँगी।

सुकवरो - जाओ बेटी, परन्तु मुझे आशा नहीं है।

इपिल - माँ दिल छोटा मत करो मैं जाके आती हूँ।

सुकवरो - जाओ।

(इपिल का प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

चौथा दृश्य

(आमने-सामने से इपिल और गंगी का प्रवेश)

गंगी - अरे, मैं तुम्हारी बात ही सोच रही थी।

इपिल - क्या?

गंगी - तुम्हारे पिताजी को कुछ राहत है?

इपिल - राहत क्या होगा? मुझे विष दे दो, चुपचाप मर जाऊंगा कहता है।

गंगी - जब पीड़ा बढ़ जाती है तो ऐसा ही होता है। बहन तुम लोग ऐसा करो कि अस्पातल ही जे जाओ।

इपिल - विचार तो हम दोनों का ऐसा ही है, परन्तु पैसों का अभाव खटकता है तब हमें कोई रास्ता नहीं सूझता है।

गंगी - मुण्डा से तुम मिली थी?

इपिल - हाँ दीदी, गई थी।

गंगी - क्या बोला ?

इपिल - बोलेगा क्या? पैसा नहीं है। पहान के पास गई थी। उसने कहा खेत टाँड़ तो तुमने मुण्डा को दे दिया अब मेरे पास पैसा मांगने आयी है? फिर पड़हा राजा के पास गई थी। वहां तो मेरे ही सामने उसने अपनी बहन को पैसा दिया।

गंगी- अब तुम्हारा विचार क्या है?

इपिल - अब मेरा विचार क्या होगा ? मुझे अब उपाय ही नहीं सूझ रहा है।

गंगी - एक रास्ता है।

इपिल - क्या?

गगी - चलो, काम करने, दिल्ली।

इपिल - हाँ दीदी, जरूर जाऊँगी। पहले पिताजी ठीक तो हो जाएँ?

गंगी - वह तुम मुझपर छोड़ दो। मैं इलाज के लिए पैसे दूंगी। मेरी अभी दो सप्ताह की छुट्टी है। तब तक तुम्हारे पिताजी ठीक हो जाएँगे।

इपिल - मेरे पिताजी स्वस्थ भी हो जाएँगे तब भी मैं दिल्ली कैसे जाऊँगी? मेरे हाथ में तो फुटी कौड़ी भी नहीं है।

गंगी - वह सोचना तुम्हारा काम नही मेरा है। दिल्ली में काम करके वापस कर दो। जाओ तुम दोनों अस्पताल के लिये तैयार हो। मैं अभी पैसे लेकर आती हूँ।

इपिल - अस्पताल में क्या -क्या जरूरत पड़ती है कपड़ा लता?

गंगी - तुम्हारे पिताजी को तो सोने के लिए पलंग मिलेगा जिस पर गद्दा होगा तकिया होगा, चादर होगी। ओढ़ने के लिए कम्बल मिलेगा। जो मरीज को देखभाल करेगा उसके लिए विस्तर और कम्बल इत्यादि की आवश्यकता होगी। खाना बनाने के बर्तन आदि।

इपिल - तब हमलोग तैयारी करते हैं।

गंगी - अवश्य। (इपिल का प्रस्थान)

गंगी - (स्वयं ही) अस्पताल में चार-पांच हजार खर्च होगा। पाँच महीने तक दिल्ली में काम करेगी तो वह रकम वसूल हो जाएगी। (गंगी का प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

पांचवा दृश्य

(गंगी रंगमंच पर अकेली है, वह दिल्ली जानेवालीयों के इंतजार में है)

गंगी - पता नहीं ये लड़कियाँ मुझे धोखा तो नहीं देंगी? अब तक किसी का पता नहीं है? (कुछ देर चुप रहकर टहलती है) सब धोखा देंगी परन्तु इपिल कभी धोखा नहीं देगी। मैंने उसकी सहायता न की होती तो पता नहीं, उसके पिताजी? इपिल अवश्य आयेगी। सिबिल भी आने की बात तो की है। रंदाय, बिरसी और मंगरी सब लोगों ने जाने की बात कहा है। पांच जन तो हैं। पांच लोगों में पाँच पचे पच्चीस हजार रुपये तो मिलेंगे। व्यक्ति पीछे पाँच हजार। उन्हें बेतन मिलेगा, नहीं मिलेगा, मुझके उनकी कीमत मिल जायगी। अरब देश और दुबई आदि देशों में लड़कियों का बहुत मूल्य है। परन्तु वहां के लोगो से मेरा परिचय नहीं है।

सिबिल - (प्रवेश करती हुई।) गंगी, सब पहुँचे?

गंगी - कोई आयी नहीं, तुम्ही पहली हो।

सिबिल - शायद न आवें?

गंगी - इपिल तो अवश्य आयेगी।

सिबिल - और अन्य तीन?

गंगी - पता नहीं मंगरी, रंदाय और बिरसी तो।

सिबिल - तुमसे बातें हुई है तो अवश्य आना चाहिए।

गंगी - बातें तो की है आने का परन्तु अब तक उनका पता नहीं।

इपिल - (प्रवेश करते हुई) हाँ मैं तो पहुंच गई।

गंगी - रंदाय, मंगरी और बिरसी भी आ रही होंगी।

रंदाय - हाँ, हम भी आ गई।

गंगी - (बिरसी का बड़ा सा बैग देखकर) आरे बाप रे, बिरसी तो इतना बड़ा बैग ले रही है?

बिरसी - पता नहीं, कपड़े कौन देगा?

गंगी - घर मालिक देगा नहीं?

मंगरी - वह तो जानकारी होने से न?

गंगी - मैंने उसी दिन समझाया था कि मोटा - झोटा ले जाने की जरूरत नहीं।

बिरसी - मैंने तो सुना ही नहीं।

गंगी - ओढ़ने पहचने का घर मालिक ही देगा। यहां तो अतिथि कपड़ा लाये बिना आ गये तो हमलोग कठिनाई में पड़ जाते हैं। पुवाल पर उन्हें सुलाया जाता है। कभी अधिक अतिथि आ गये तो उस घर का मालिक बिना कपड़ा के सुबह तक रह जाता है।

मंगरी - फिर हम जाएँगे कैसे?

गंगी - अभी बस आयेगी उस से राँची जाएँगे, फिर राँची से रामगढ़, रामगढ़ से रेलगाड़ी पकड़ कर सीधा दिल्ली जाएँगे।

सिबिल - तब चलो बस पकड़ने।

बिरसी - बस कहाँ मिलेगी?

मंगरी - इस बेवकूफ को तो कुछ भी जानकारी नहीं।

सिबिल- बस, बस, वैसा कहा नहीं जातां घर से पहली बार निकली है। उसे क्या जानकारी है?

मंगरी - फिर तो दिल्ली में काम कैसे करेगी?

गंगी - कठिन नहीं है। कहीं जाने-आने की फुर्सत नहीं है। यदि कहीं जाना होगा तो घर मालिक या घर का कोई सदस्य साथ लेकर जाएगा। यदि तुम अकेले निकल गई तो दिल्ली, दिल्ली है। कहां भटक जाओगी पता नहीं। यदि गुण्डों से पाला पड़ा तो समझो तुम्हारा पता ही नहीं चलेगा।

बिरसी - यह मुझे पता रहता तो मैं हरगिज नहीं जाती।

गंगी - वैसी बातें सोचो मत। वहाँ घर से ही मत निकलो।

मंगरी - घर में तो कितने दिन चुप बैठोगी? कभी तो निकलना ही पड़ेगा।

गंगी - घर से निकलकर कहाँ जाओगी? हम लोगों का गाँव घर की तरह नदी-नाला, बगीचा कि उपवन नहीं है। सब ओर बड़े-बड़े भवन हैं। कहीं भी जाना होगा घर मालिक ही ले जाएगा।

बिरसी - दिसा फिरने के लिए तो निकलना पड़ेगा।

गंगी - कहाँ मैदान मिलेगा?

बिरसी - नदी नाला?

गंगी - वह सब सोचो मत। मैदान अथवा नदी नाला जाने की आवश्यकता नहीं। सबकी व्यवस्था घर ही में है। मैदान नहीं है, नदी दूर है। फिर नदी में कहाँ बैठोगे? वहां तो

दिन रात लोग रहते हैं। जो आवश्यक है उसका इंतजाम घर ही में है। घर में नल लगा है। पीने का पानी, नहाना, धोने की सुविधा घर ही में है। चलो, अब चलें बस के आने का समय हो गया।

सिबिल - चलो।

गंगी - इपिल, तुम कुछ बोल नहीं रही हो।

इपिल - मैं सुन रही हूँ।

गंगी - तब चलो।

(अपना-अपना बैग लेकर सबका प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

तीसरा अङ्क

पहला दृश्य

(दिल्ली में रहते छः महीने हो गये अब सभी लड़कियाँ छुट्टी आ रही हैं। इपिल भारी पांव में है)

इपिल - आह! किस जंजाल में मैं फँस गई। गाँव में तो पंचायत बैठेगी। मरे मां-बाप को दण्ड भरना होगा। गंगी दीदी के कहने पर मैं चली, आज तो इस हाल में हूँ। यदि मैं गंगी की बात न मानती तो मेरे पिता मर जाते। पता नहीं गंगी, मुंझे मेरे घर मालिक के हाथ दी है न क्या। तभी तो जब भी मैं बेतन की बात उठाती थी मकान मालिक कहता था - मैंने पाँच हजार रुपये दिये हैं जब तक वसूल नहीं होगा मैं वेतन नहीं दूँगा। घर वापस जाने के लिए भी मात्र किराया उसने दिया है।

सिबिल - (प्रवेश करती हुई) क्या सोच रही हो?

इपिल - सोचूंगी क्या? दीदी तुम तो स्वयं देख रही हो मेरी हालत जहर खा लूंगी कि फाँसी लगा कर मर जाऊँगी कि रेल पटरी पर लेट जाऊँगी। मेरा दिमाग घूम रहा है।

सिबिल - बस! बस! ये सब बातें मत बोलो ये अच्छी बातें नहीं है।

इपिल - क्या नहीं है? सब कुछ तो मैं झेल रही हूँ। मेरे बड़े भाई पढ़े इस विचार से सभी खेत टाँड़ बन्धिक में दे दिये गये। पिताजी बीमार थे तो मुर्गी-बकरी कि सुअर सभी बालिके लिए वैद्य भगतों को दे दिये गये। हम अस्पताल की शरण में गये तो मैं गंगी दीदी के जाल में फँस गई।

सिबिल - बस, धैर्य रखो बहन, भगवान है।

इपिल - भगवान कहां है? जो चलता पूरजा घर का है कि धनवान है उसके लिए भगवान है।

सिबिल - वैसा नहीं कहा जाता।

इपिल - कहूँगी क्यों नहीं? इतने दिन मैं ने काम किया घर मालिक मात्र घर पहुँचने तक का किराया दिया है।

सिबिल - बोली नहीं इस स्थिति में घर भेज रहे हो खर्चा दो।

इपिल - बोलूंगी क्या? वे दोनों दम्पति तो निर्णय किये थे कि मुझे घर से निकाल देंगे। मालकिन सोचती थी कि मैं घर मालिक से फँस गई हूँ।

सिबिल - तो फिर यह किसका है?

इपिल - घर मालिक का भाई। पता नहीं कहां इंजीनियारिंग कर रहा है। मालिक मालकिन तो दोनों नौकरी में हैं। बच्चे स्कूल चले जाते हैं। फिर तो मैं अकेले रह जाती थी। मेरे मना करने पर भी वह मुँह काला कर लेता था। प्रतिदिन उसकी हरकत ऐसी ही थी।

सिबिल - फिर तुमने मालकिन को बताया नहीं।

इपिल - मैंने बताया परन्तु उसे विश्वास नहीं हुआ। छुट्टी समाप्त हुई और वह चला गया। चार महीने हुए तो मैं दृष्टि में आ गई। मालिकन को अपेन पति पर शक था। इसलिए उनका विचार था मुझे घर से निकाल बाहर करने का। मैंने कहा कि मैंने आरम्भ में बताया था परन्तु आप लोगों ने विश्वास नहीं किया।

सिबिल - फिर?

इपिल - फिर मालिक ने मालकिन को समझाया कि अभी तो कष्ट में है। जब इसके साथी जाने लगे तो हम भी भेज देंगे। नहीं तो हम पुलिस केस में फँस जाएँगे।

सिबिल - अच्छा चिंता मत करो।

इपिल - चिन्ता क्यों नहीं करूँगी। गाँव में पंचायत बैठेगी, हाथ में पैसे तो है नहीं घर में जगह जमीन बन्धिक में दे दी गई है।

सिबिल - ऊपरवाला हमें देखेगा ही।

इपिल - कौन ऊपरवाला?

सिबिल - जो अनादि से देख रहा है।

इपिल - पता नहीं?

सिबिल - अवश्य कोई न कोई मार्ग निकलेगा ही। वह मार्ग दिखाएगा ही, निराश मत हो।

रंदाय - (प्रवेश करती हुई) वाह! तुम तो अच्छा संदेश लेकर जा रही हो।

सिबिल - तुम्हें खुशी हो रही है। हम नारियों का जीवन ही ऐसा है।

रंदाय - जीजा जी कहाँ है? (इपिल सर झुका लेती है)

सिबिल - तुम्हें मजाक सूझ रहा है? तुम्हीं ऐसी हालत में रहती तो पता चलता।

रंदाय - ऐसी हालत में रहती तब न! अभी तो ऐसी हालत में नहीं न हूँ।

सिबिल - बस, ऐसी बातें मत करो, अन्यथा हम तुम्हें किनारे कर देंगे।

बिरसी - (प्रवेश करती हुई) ऐ' एपिल की यह हालत?

मंगरी - (प्रवेश करती हुई) चमक रही है।

सिबिल - बस-बस इस समय इपिल कष्ट में है। दुःखी व्यक्ति पर व्यंग्य नहीं कसा जाता है। अभी तो हम हँस रहे हैं कल हमारी भी यही दशा होगी तब?

बिरसी - कहा नहीं जा सकता है। ऐसा हो सकता है। सम्भवना को किसने देखा है?

गंगी - (प्रवेश करती हुई) शीर्घ तुमलोग चलो ट्रेन के आने का समय हो गया।

सब - चलो।

(सबका प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

दूसरा दृश्य

(सब गाँव पहुँच जाते हैं। गाँव के कुछ नौजवान जमा हैं। इपिल उनके बीच सर झुकाए बैठी है।)

इपिल - मैं दिल्ली नहीं जाती तो उचित था। (चुप हो जाती है) फिर और तो कोई मार्ग ही नहीं था। यदि गंगी पिजाजी को अस्पताल ले जोन का भार न उठाती तो पता नहीं पिताजी की हालत क्या होती।

सिबिल - (प्रवेश करती हुई) बहन इपिल, क्या सोच रही हो?

इपिल - मैं सोचूंगी क्या? सम्पूर्ण गांव में हल्ला हो गया है। फांसी हो जाऊँगी कि कुँए में कूद पड़ूँ, समझ में नहीं आता।

सिबिल - इन अनुचित बातों को बिल्कुल मत सोचो।

इपिल - मैं सोचूंगी नहीं कैस? अब तो पंचायत होगी। जुर्माना भरना पड़ेगा। हम जुर्मना भरेंगे कैसे?

सिबिल - बहन, वह सब चिन्ता मत करो ऊपरवाला देखेगा।

मसी - (प्रवेश करते हुए) तुम दोनों में बातें क्या हो रही है बहन।

सिबिल - यह दिल्ली का संदेश हमने लाया है कल तो बैठक होगी।

मसी - सच में, सारा गाँव जानता है। मुण्डा और पहान को खुशी हो रही है कि फल लग गया है।

बिरसा - (प्रवेश करते हुए) फल लग गया है? बहन इपिल, तुम अपने में दृढ़ रहो। हम मुण्डा-पहान का सामना करेंगे। अब तक उन दोनों ने क्या किया? इतना जुर्माना भरवाया

गया। बुधनी और रिझा असम भागे थे। लौटने पर मगो के (मगो- एक ही गोत्र में पति-पत्नी बनना) बहाने दो-दो हजार जुर्माना हुआ। खा-पीकर सब पैसे उड़ा दिये गये।

करमा - (प्रवेश करते हुए) यही धंधा हमारे समाज को ले डूब रहा है। इस बार हम खाने नहीं देंगे अन्यथा हमारा विद्यालय और महाविद्यालय में पढ़ने का मूल्य क्या है?

दोन्दोः - (प्रवेश करते हुए) तुमने उचित ही कहा। इतना पढ़-लिख कर हमने गाँव को न सुधारा तो सुधारेगा कौन?

रतन - (प्रवेश करते हुए) हां बहन, तुम अपने में दृढ़ रहो। तुम दृढ़ रहो तो कोई तुम्हें हिला नहीं सकता।

बिरसा - मुझे पता है, मरे घर में बातचीत हो रही थी - इपिल अपने पिता की बीमारी में मुंडा, पहान, पड़हाराजा कहाँ-कहाँ सहायता के लिए हाथ नहीं पसारी।

सिबिल - तब तो गंगी सहायता की और गंगी की देन चुकाने के लिए दिल्ली चली गई।

करमा - उस बैठक में गंगी को पकड़ेंगे क्योंकि वही लड़कियों को दिल्ली लेकर बिक्री करती है।

मसी - तुम अपने में दृढ़ रहो। युवक-युवतियों को बैठकी में जाना माना है। परन्तु हम जाएँगे।

सिबिल - हम इतने लोग तुम्हारे साथ हैं। तुम निराश मत हो।

बिरसा - इस बैठकी में सबको आना है जो नहीं आयगा उसे दण्ड भरना पड़ेगा। अभी हम साथ हैं हम में से किसी को हम अध्यक्ष बना लें।

दोन्दोः - मैं रतन का नाम प्रस्ताव में रखता हूँ।

रतन - मुझे मत चुनो, मेरा ही घर लटपट है।

मसी - हाँ तो बात सही है। हम लोग बुजुर्गों से बैठकी की लड़ाई में हार जाएंगे।

सिबिल - तब भैया, बिरसा को रखा जाय?

सब - हाँ-हाँ, तुम्हारा कहना उचित है।

बिरसा - सचिव।

रतन - वह तो तुम्हीं चुन लो।

बिरसा - फिर से मसी रहे।

सब - हाँ, बिल्कुल सही कहा तुमने।

दोन्दोः - खजांची कौन होगा?

रतन - सिबिल रहे, है न?

करमा- इस संघ का नाम क्या रखा जायेगा?

बिरसा - बाद में अच्छी तरह सोच कर हम चुनेंगे आभी तो काम चलाने के लिए गया मुण्डा युवा संघ नाम देंगे।

सिबिल - गया तो कौन?

बिरसा - बिरसा मुण्डा का दाहिना हाथ था। जब अंग्रेज कमिशनर विलकिंगसन उसे पकड़ने गया तब गया की पत्नी समाट से कूटने लगी।

दोन्दोः - मुण्डाओं के इतिहास की इतनी जानकारी तुम्हें है?

बिरसा - हां, बुजुर्गों से मैंने सुना है। तब दो महीने या तीन महीने में बैठकी करेंगे।

रतन - दो महीने तो नहीं तीन महीने में साथ उपस्थित हो सकेंगे।

बिरसा - तब बहन इपिल, मैं अध्यक्ष तुम्हें आदेश देता हूँ तुम मत झुको। तुम्हारी शक्ति पाकर हम भी सशक्त हो जाएँगे।

इपिल - हाँ। भैया, मैं करार करती हूँ कि नहीं झुकूंगी।

बिरसा - फिर तो हम कल मिलेंगे। चलो..

(सभी जाने लगते हैं।)

(पटाक्षेप)

तीसरा दृश्य

(पंचायत बैठ रही है आमने सामने से मुण्डा और पहान प्रवेश करते हैं, एक दूसरे का अभिवादन कर पत्थर पर बैठ जाते हैं।)

मुण्डा - जोहार।

पहान - जोहार। बहुत दिन के बाद ऐसी बैठकी हो रही है।

पड़हा राजा - (प्रवेश करते हुए) हाँ तो, जोहार।

मुण्डा पहान - जोहार।

पड़हा राजा - रीझा नहीं है वह अपने समधी के पास गया है।

(तब तक दो-तीन आदमी प्रवेश करते हैं)

पहुँचनेवाले - जोहार।

(पहले से उपस्थित सभी जवाब में जोहार कहते हैं।)

पहान - आने वाले आते रहें। हम बैठकी आरम्भ करते हैं।

मुंडा - हाँ, आरम्भ करना ही उचित है।

पहान - बैठकी का विषय तो सबको पता ही है?

पड़हाराजा - तब भी कह दिया जाए तो उचित होगा।

पहान - गंगी पाँच लड़कियों को दाई-धंगरिन के लिए दिल्ली ले गई थी। बिरसी, रंदाय, सिबिल, इपिल और मंगरी। काम करने तो गये तो ठीक किये। सभी पैसे बांध कर लाये।

मुण्डा - बैठक की बात कहा जाए। उन्होंने क्या किया कहने की आवश्यकता नहीं है।

पहान - हाँ, वही तो मैं कह रहा हूँ। लेकिन दिल्ली से इपिल कुछ और पोटली बांध कर लायी है।

पड़हा राजा - स्पष्ट बोला जाए।

पहान - हाँ कहा रहा हूँ। इपिल भारी पाँव में आयी है।

मुण्डा - इसकी जानकारी तो किसे है?

पहान - हाँ, मैं कह रहा हूँ। इस बात की चर्चा जब गाँव भर में होने लगी मैंने मुण्डा की पत्नी को भेजा कि वह पता लगावे क्योंकि वही प्रसव के समय गाँव में दाई का काम करती है।

पड़हा राजा - तब तो उसे बुलाया जाय। (तभी मुण्डा की पत्नी प्रवेश करती है) ये तो आ गई कहते कहते।

पहान - हाँ रोंगो, इपिल का हाल चाल बता सकती हो।

मुण्डा की पत्नी - बिल्कुल बता सकती हूँ। पूछिए क्या पूछना चाहते हैं?

पड़हा राजा- तुमने ही मुझे बताया था कि इपिल भारी पांव में है।

मुण्डा की पत्नी - हाँ ऽ ऽ ऽ।

पड़हा राजा - अन्यथा तुम्हें जुर्माना भरना होगा।

(रोंगो - मुण्डा की पत्नी रोंगो गाँव से लायी गई है।)

मुण्डा की पत्नी - जुर्माना किस चीज का भरवायेंगे? प्रतिदिन तो यही काम करती हूँ। प्रसव के बाद प्रसूता की मालिश में ही करती हूँ।

पहान - अच्छा जाओ, तुम्ही सनिका और सुकवरो को बुला लाओ।

मुण्डा की पत्नी - अच्छा। (प्रस्थान करना)

(तभी बिरसा, करमा, दोन्दोः, मसी पहुँचते हैं।)

पहान - यहाँ युवाओं का कोई काम नहीं है।

बिरसा - आप ही लोग सदा-सदा तो नहीं रहेंगे। कल हमारे सिर पर यही बोझ पड़ेगा तो हम क्या करेंगे?

पड़हा राजा - हाँ बेटा, तुम्हारा कहना उचित है, उन्हें रहने दिया जाय। वे हमारी बात सुनें। कल को ये ही बैठेंगे। हम तो सदा नहीं रहेंगे।

मुण्डा - हाँ तो रहें। बैठो बेटे। (सब बैठते हैं)

(मुण्डा की पत्नी सनिका दम्पति के साथ प्रवेश करती है।

पहान - सनिका बोलो तुम दोनों। तुम दोनों की बेटी इपिल ने क्या किया है? (दोनों चुप हैं)

मुण्डा - इन्हें हम क्या पूछेंगे? इनकी बेटी इपिल आवे।

पहान - इपिल जिस युवक के साथी थी वह तो जात कि परजात।

(दोन्दोः के साथ इपिल और दिल्ली से लौटी युवतियाँ आती हैं)

पहान - (इपिल को देखकर) बोलो इपिल तुम्हारा जिस युवक से सम्बन्ध था वह हमारी जाति का था या अन्य?

(इपिल चुप रहती है)

मुण्डा - दिल्ली में हमारी जाति तो नहीं अन्य जाति ही होगा।

पहान - सुन रहे हो जी सनिका।

सनिका - हाँ, सुन रहा हूँ।

मुण्डा - तब तुम दोनों क्या कह रहे हो?

पहान - यह तो बड़ा केस है इसलिए जुर्माना अधिक ही भरना पड़ेगा।

सनिका - हाँ आप लोगों की इच्छा, हम दोनों की बेटी ही दोषी है।

मुण्डा - तब पड़हा राजा आपका क्या कहना है?

पड़हा राजा - गाँव में आप दोनों का फैसला चलता है। मैं तो पंचायत में बात करूँगा।

पहान - तब यह तो बड़ा अपराध है अतः पाँच हजार रुपये दण्ड स्वरूप भरना होगा।

सनिका - आप लोगों का फैसला हमें स्वीकार है।

इपिल - (तनकर खड़ी होती हुई) पिताजी, आप हाँ क्यों कर रहे हैं। मुझे ये लोग समझावें। मैं किनके कारण इस स्थिति में हूँ।

पहान - तुम्हें हमने भेजा था? तुम स्वयं गई थी। सीमा से बाहर बोलो मत नहीं तो हम तुम्हें पीटेंगे।

इपिल - पीटकर देखिए तो जेल का मजा न चखा दी तो कहना ही छोड़ दूंगी।

सुकवरो - बस, बेटी बड़ों से मुँह नहीं लड़ाते हैं।

इपिल - कहूँगी क्यों नहीं? बात ही वैसी निकल रही है। पिताजी बीमार थे तब मैं सबके सामने हाथ पसारी, किसने सहायता दी?

बिरसा - वह तो बहन तुमने सही कहा ? गंगी को कोई नहीं बैठाता है, वह लड़कियों को लेके दिल्ली बेच आती है।

(गंगी भागने का प्रयास करती है, सिबिल उसे पकड़ लेती है)

सिबिल - भागती कहाँ हो? सुनो, हम इतने लोग तुम्हारे साथ दिल्ली गयीं। किसी को मजूरी नहीं मिली। केवल किराया मात्र वापसी का।

करमा - तेतर टोली का रतनी को भी गंगी ही ले गई थी और जो दिल्ली में ही मर गयी।

(गंगी झटक कर भागना चाहती है लेकिन रंदाय पकड़ लेती है)

रंदाय - हम भागने नहीं देंगी। आज देखेंगे लड़कियों को दिल्ली ले जाकर बिक्री करने का पैसा कितना जमा की हो।

पहान - यह दोष रुपये से कम क्या होगा?

सनिका - मैं एक बात कहूँ? शायद मेरी बात को महत्व नहीं दिया जाएगा।

मुण्डा - क्यों नहीं? बोलो।

सनिका - मैं बीमार था तब यदि गंगी ने सहायता न दी होती तो मैं आज जीवित न रहता। उसे क्षमा कर दिया जाय तो ?

पहान - आप लोग सब कहिए। आप लोगों का विचार क्या है?

सभी युवक-युवती - उसे क्षमा कर दिया जाय परन्तु प्रतिज्ञा करे कि आइन्दे वह ऐसा काम नहीं करेगी।

पहान - क्या तुम स्वीकार करती हो?

मुण्डा - हाँ कहती हो।

गंगी - हाँ मैं स्वीकार करती हूँ और प्रतिज्ञा करती हूँ कि आइन्दे ऐसा काम नहीं करूंगी। (सनिका के पैर पर गिरती है) पिताजी आप दोनों मुझे क्षमा कर दें।

सनिका - (उठाते हुए) बेटी जब सबने क्षमा कर दिया तो हम भी क्षमा कर दिये।

(पटाक्षेप)

- समाप्त -

जोवाकिम तोपनो

जन्म तिथि - 04/02/1952
जन्म स्थान - तोरपा मरंग टोला, खूंटी, झारखंड
माता का नाम - रूंथ तोपनो
पिता का नाम - मरकुस तोपनो
शिक्षा - बी.ए.

जोवाकिम तोपनो मुंडारी भाषा के वरिष्ठ लेखक और चिंतक हैं. कॉलेज के जमाने से ही आपकी रुचि मुंडा भाषा, साहित्य, संस्कृति, इतिहास और सामाजिक कार्यों में रही है. आपने प्राथमिक शिक्षा गाँव में ही संत जोसेफ उच्च विद्यालय, तोरपा से पायी और संत जेवियर्स कॉलेज रांची से बीए किया है. अपनी मातृभाषा मुंडारी और हिन्दी में पहले आपने स्वतंत्र रूप से यदाकदा लिखना शुरू किया फिर आगे चलकर इसे अपना बौद्धिक दायित्व बना लिया। हिंदी में लिखे गये आपके लेख 'निष्कलंका' रांची और 'सन्देश' पटना से प्रकाशित होते रहे। मुंडारी में आपने सर्वाधिक लेखन किया है जो 'झारखंड ज्योति', 'सनङ', 'समपड़तिङ', 'सेंड़ा सेतेंग', 'सेतेंग', 'झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा', 'जोहार दिसुम खबर' आदि में निरंतर प्रकाशित हुए हैं.

'डीड़गर इपिल' आपका पहला नाटक है और स्वतंत्र रूप से पहली प्रकाशित पुस्तक भी.

संपर्क - द्वारा सुश्री लेवनी तोपनो
मरंग टोला तोरपा 'गुयु'
प्रेमनगर, कांके, राँची (झारखंड) - 834006

प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन
चेशायर होम रोड, बरियातु, राँची-834009 झारखण्ड
www.kharia.in | www.akhra.org.in | pkfranchi@gmail.com

₹ 120
9 789381 056592 >